mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-52 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

22 फरवरी 2025 शनिवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

# दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

23 बरस की हुईं ...

@ पेज 7

# 36 सोशल मीडिया अकाउंट्स के खिलाफ केस दर्ज

**प्रयागराज (एजेंसी)।** प्रयागराज में महाकुंभ के मद्देनजर स्नान जारी है। इस बीच प्रयागराज पुलिस ने 36 और सोशल मीडिया अकाउंट्स के खिलाफ केस दर्ज किया है। भ्रामक रूप से अन्य स्थानों और

### ● महाकुंभ के नाम पर शेयर किया फर्जी वीडियो

घटनाओं की वीडियो सोशल मीडिया अकाउंट में अपलोड कर महाकुंभ का बताने वाले लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। सोशल मीडिया पर ऐसे कई अकाउंट्स हैं जो पाकिस्तानी वीडियोज को भारत का बनाकर बोल रहे हैं। इन सब की डिटेल्स मांगी गई हैं और जल्द ही कार्रवाई की

जाएगी। बता दें कि इससे पहले आज ही 103 सोशल मीडिया हैंडल्स के खिलाफ एक्शन लिया जा चुका है। बता दें कि इसी मामले में प्रयागराज के एक यूट्यूबर समेत 3 लोगों को शुक्रवार को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

दरअसल इन तीनों लोगों पर आरोप है कि इन्होंने महाकुंभ में नहीं रही महिलाओं के वीडियो को बनाकर यूट्यूब और टेलीग्राम पर अपलोड और शेयर किया है। पुलिस को शक है कि इन लोगों ने देश के 60-70 अस्पतालों के सीसीटीवी कैमरों को हैक किया है। अस्पतालों के स्त्री रोग विशेषज्ञों के चैंबर में महिलाओं के चेकअप के वीडियो ये लोग लीक करते हैं। बता दें कि जब पुलिस ने छानबीन की तो इनके पास से महिलाओं के आपत्तिजनक फुटेज मिले हैं। वहीं गिरफ्तार आरोपियों ने से 2 लोगों को महाराष्ट्र से गिरफ्तार किया गया है। इन्हीं से पूछताछ के अधार पर प्रयागराज के यूट्यूबर चंद्रप्रकाश फूलचंद को गिरफ्तार किया गया है।

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान चंद्रप्रकाश फूलचंद, अशोक तेली और राजेंद्र पाटिल को गिरफ्तार किया गया है। बता दें कि चंद्रप्रकाश फूलचंद खुद वीडियो बनाता था। साथ ही वह वीडियो को अपने चैनल पर अपलोड कर ऑनलाइन बेचता था। आरोपी के टेलीग्राम पर 100 से ज्यादा सब्सक्राइबर्स हैं। प्रयागराज के इन आरोपियों के खिलाफ पुलिस ताबड़तोड़ एक्शन ले रही है। प्रयागराज पुलिस ने महाकुंभ में नहाती महिलाओं का चोरी से वीडियो बनाकर डार्क वेब (अश्लील साइट) और दूसरे सोशल मीडिया पर बेचने वालों पर बड़ी कार्रवाई की है। प्रयागराज पुलिस ने इस मामले में 13 एफआईआर दर्ज की है। साथ ही 103 सोशल मीडिया हैंडल के खिलाफ एक्शन लिया है।

## संक्षिप्त समाचार

### पाकिस्तान में नाले में वाहन गिरने से 8 बारातियों की मौत

**लाहौर (एजेंसी)।** पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में कई बारातियों की जिंदगी के लिए बारात की रात बहुत काली साबित हो गई। बताया जा रहा है कि पंजाब प्रांत में विवाह समारोह से लौट रहे बारातियों से भरा एक वाहन (वैन) अचानक नाले में गिर गया। इस दुर्घटना में वैन में सवार 8 लोगों की मौत हो गई।

जबकि कई लोग घायल हुए हैं, जिन्हें नजदीकी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। पाकिस्तान पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। बताया जा रहा है किक यह घटना बृहस्पतिवार देर रात लाहौर से करीब 50 किलोमीटर दूर कसूर में हुई, जहां 8 बेकसूर लोग मारे गए। पाकिस्तानी अधिकारियों के अनुसार, वाहन में महिलाओं समेत 10 लोग सवार थे, जो लाहौर में एक विवाह समारोह से लौट रहे थे। मगर उन्हें क्या पता कि यह रात उनकी जिंदगी के लिए आखिरी साबित हो जाएगी। पाकिस्तानी अधिकारियों ने कहा कि लौटने के दौरान तेज गति के कारण वाहन सड़क से फिसलकर नाले में गिर गया। वाहन में दो परिवारों के सदस्य सवार थे। बचाव दल ने मौके पर पहुंचकर आठ शव बरामद किए और दो घायल यात्रियों को अस्पताल पहुंचाया। उन्होंने बताया कि घायलों की हालत गंभीर है। फिलहाल उनका इलाज चल रहा है। वाहन के सड़क से फिसलकर नाले में गिरने से पहले ही चालक ने गाड़ी से छलांग लगा दी।

### ऑस्ट्रेलिया-चीन में घमासान, सागर पर मंडराये कैनबरा के लड़ाकू विमान

**मेलबन (एजेंसी)।** ऑस्ट्रेलिया और चीन के बीच अब ठन गई है। चीनी सेना के परमाणु सैन्य अभ्यास के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के लड़ाकू विमान अब तस्मान सागर के ऊपर अपनी ताकत दिखा रहे हैं। मगर चीन से इससे बौखला गया है। ऑस्ट्रेलिया

के रक्षा मंत्री रिचर्ड मार्ल्स ने शुक्रवार को कहा कि चीनी नौसेना ने चेतावनी दी है कि ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच तस्मान सागर के ऊपर उड़ान भर रहे विमान एक गुप्त 'लाइव-फायर' अभ्यास के ऊपर से उड़ रहे हैं। बता दें कि विनियामक 'एयर सर्विसेस ऑस्ट्रेलिया' ने दोनों देशों के बीच हवाई क्षेत्र में एक संभावित खतरे की चेतावनी व्यावसायिक पायलटों को दी है। चीन के तीन युद्धपोतों के ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट के पास अभ्यास करने के मद्देनजर चेतावनी दी गई, लेकिन मार्ल्स ने कहा कि ऑस्ट्रेलियाई अधिकारियों को ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में चीन की 'लाइव फायरिंग' योजनाओं के बारे में एयरलाइनों से ही पता चला। मार्ल्स ने पर्थ में ऑस्ट्रेलियन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्प रेडियो से कहा, ''हम स्पष्ट बता दें कि चीन ने कोई सूचना नहीं दी थी।'' उन्होंने कहा, ''चीन ने एक अधिसूचना जारी की थी कि वह 'लाइव फायरिंग' करना चाहता है।

### मुठभेड़ में 4 हार्डकोर महिला नक्सलियों की मौत, घायल साथियों को उठा ले गए अन्य नक्सली

**बालाघाट (एजेंसी)।** बालाघाट में हॉकफोर्स और जिला पुलिस बल ने चार हार्डकोर महिला नक्सलियों को मार गिराया है। बुधवार के दिन सुरक्षाबलों ने इस कार्रवाई को अंजाम दिया और सीएम मोहन यादव ने भी सुरक्षाबलों की इस सफलता को सराहा। अब इस मुठभेड़ में मारी गई नक्सलियों की पहचान हो गई हैं। इनमें आशा कान्हा भोरमदेव एरिया कमेटी में कमांडर थी। वहीं शीला, रंजीता, लख्खे कान्हा भोरमदेव दलम में सदस्य थी। इनके खिलाफ कुल 62 लाख रूपये का इनाम था। पुलिस ने चारों के शव को बरामद कर सुरक्षित रखवा दिए हैं। सभी के खिलाफ दर्जन भर से अधिक अपराध दर्ज हैं। सभी छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले की रहने वाली हैं। नक्सल ऑपरेशन को लेकर आयोजित पत्रकार वार्ता में बालाघाट जोन के आईजी संजय सिंह ने बताया कि 19 फरवरी को थाना गढ़ी के सूपखार वन रेंज में रौंदा फॉरेस्ट कैम्प के पास यह मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ में अन्य नक्सली घायल हुए, जिन्हें उनके साथी घने जंगल का फायदा उठाते हुए अपने साथ लेकर भागने में सफल हुए। अब जंगल में 12 से अधिक सर्चिंग टीम के लगभग 500 से अधिक जवानों को जंगल में उतारा गया हैं। ये सभी जवान उन नक्सलियों की तलाश कर रहे हैं, जो मुठभेड़ में घायल हुए थे, लेकिन दूसरे नक्सलियों की मदद से मौके से भागने में सफल रहे। पुलिस अधिकारी ने बताया कि दो दर्जन से ज्यादा की संख्या में हथियारों से लैस नक्सलियों के आने की सूचना मिली थी। ऐसे में हॉकफोर्स और जिला पुलिस टीम को सर्चिंग पर भेजा गया। इस दौरान गढ़ी के सूपखार वन रेंज के रौंदा फारेस्ट कैम्प के पास सर्चिंग टीम पर नक्सलियों की ओर से फायरिंग शुरू कर दी गई।

**एकनाथ शिंदे ने किसे चेताया?**

### 'हल्के में नहीं लेना वरना तांगा पलट दूंगा, इशारा समझ लें'

**मुंबई (एजेंसी)।** महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार को कहा कि उन्होंने पहले ही कहा है कि उन्हें हल्के में न लें,नहीं तो वह तांगा पलटा देंगे। वो कार्यकर्ता हैं, सामान्य कार्यकर्ता हैं, बालासाहेब और दीघे साहब के कार्यकर्ता हैं, यह समझ कर सबको सबक लेना चाहिए। एकनाथ शिंदे ने कहा कि जब उन्हें हल्के में लिया गया तो उन्होंने 2022 में तांगा पलट दिया, सरकार बदल दिया। आम लोगों की मन की सरकार को लाये , डबल इंजन की सरकार जो लोग चाहते थे। शिंदे ने काह कि उन्होंने उसी वक्त विधानसभा में कहा था कि वो और देवेंद्र फडणवीस 200 से ज्यादा सीट लाएंगे और 232 सीट लेकर आए। इसलिए यह इशारा जिसे समझना वह समझ लें, वो अपना काम करते रहेंगे। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि उन्हें पुरस्कार मिला। पवार साहब ने पुरस्कार दिया, एक मराठी व्यक्ति मराठी व्यक्ति को पुरस्कार देता है, राष्ट्र गौरव पुरस्कार उनके जैसे

कार्यकर्ताओं को दिया गया। इससे कितनी जलन हो गई, कितने जलोगे, एक दिन जलकर खाक हो जाओगे। शिंदे ने कहा कि उस वक्त पवार साहब का अपमान किया, जिन्होंने उनको मुख्यमंत्री बनाया था। साहित्यिक लोगों को दलाल कहा, उनका अपमान किया। शिंदे ने कहा कि मेरा अपमान छोड़ो, अमित शाह का नाम जोड़ा गया। यह सब चल क्या रहा है, सुधरेंगे कि नहीं, अभी भी कह रहा हूं मेरे ऊपर जितने भी आरोप लगाओगे, कितनी भी गालियां दो, जब तक महाराष्ट्र की जनता मेरे साथ है तो मुझे कोई चिंता नहीं है। यह पूछे जाने पर कि अन्य राज्यों में रमजान के दौरान मुस्लिम समाज को 1 घंटे पहले छुट्टी दी जा रही है क्या इस तरीके की बात क्या महाराष्ट्र सरकार भी सोच रही है? इसका उत्तर देते हुए महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री शिंदे ने कहा कि रमजान के महीने में 1 घंटे पहले छुट्टी का इस तरीके का कोई प्रस्ताव अभी आया नहीं है। एकनाथ शिंदे ने कहा की वो विदर्भ के दौरे पर हैं। चुनाव के दौरान वह प्रचार के लिए आए थे। उस दौरान उन्होंने कहा था कि महायुती के उम्मीदवार को चुनकर दो इसलिए वो आभार करने के लिए यहां आये हैं। शिंदे ने कहा कि महाराष्ट्र की जनता ने महायुती को बड़ी जीत दी है। हमारी जवाबदारी और बढ़ गई है। उनको आभार करने के लिए आया हूं। आज दसवीं के परीक्षा लीक होने के संबंध में जब उनसे पूछा गया तो एकनाथ शिंदे ने कहा कि जो भी दोषी होगा उस पर कार्रवाई होगी।

### दिल्ली विधानसभा के पहला सत्र की तारीख

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली में रेखा गुप्ता के नेतृत्व वाली सरकार पूरी तरह से एक्शन मोड में है। बीजेपी के वादों को पूरा करने और पिछली सरकार के कार्यकाल की कमियों को दुरूस्त करने के लिए ताबड़तोड़ कदम उठाए जा रहे है। वहीं इस बीच नए विधानसभा के पहले सत्र की तारीख भी आ गई है। 24 फरवरी से 27 फरवरी तक दिल्ली विधानसभा का पहला सत्र चलेगा। 24 फरवरी सोमवार से शुरू होनेवाले विधानसभा सत्र में लंबित कैग रिपोर्ट पेश की जाएगी। अधिकारियों ने बताया कि सत्र 24, 25, 27 फरवरी को आयोजित किया जाएगा तथा आम आदमी पार्टी (आप) की पिछली सरकार के प्रदर्शन से जुड़े 14 लंबित कैग (नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक) रिपोर्ट सदन में पेश की जाएंगी। विधायकों को 24-25 फरवरी को शपथ दिलाई जाएगी और 26 फरवरी को शिवरात्रि की छुट्टी के बाद बीजेपी की सरकार कैग रिपोर्ट पेश करेगी। इससे पहले दिल्ली में 'आप' सरकार के दौरान भाजपा ने अदालत से गुहार लगाई थी कि सरकार को कैग रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया जाए। भाजपा ने 'आप' सरकार पर अपने ''भ्रष्टाचार'' को छिपाने के लिए रिपोर्ट को रोकने का आरोप लगाया था। इस महीने की शुरुआत में हुए विधानसभा चुनावों के बाद भाजपा ने दिल्ली में नई सरकार बनाई है।

### 'भारत से नफरत करने वालों से राहुल गांधी को है प्यार'

**भाजपा नेता गौरव भाटिया ने साधा निशाना**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गुरुवार को एक बहुत बड़ा खुलासा करते हुए कहा कि यूएसएआईडी के जरिए मिलने वाले करोड़ों डॉलर्स का इस्तेमाल करके भारत में सरकार बदलने की कोशिश की गई। उन्होंने कहा कि यूएसएआईडी के जरिए जो मदद भारत को दी जा रही थी उसमें दिखाया तो ये गया कि पैसा भारत में वोटर टर्नआउट बढ़ाने के लिए खर्च किया जाएगा, लेकिन इसका इस्तेमाल भारत के चुनाव को प्रभावित करने के लिए किया गया। डोनाल्ड ट्रंप का यह बयान सामने आने के बाद भारत में सियासत गरमा गई और बीजेपी एवं कांग्रेस के नेता आमने-सामने आ गए।

इसे लेकर भाजपा नेता गौरव भाटिया ने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी को हराने के लिए राहुल गांधी ने भारत विरोधी ताकतों का सहारा लिया है। राहुल गांधी हमारे देश के लोकतंत्र को खत्म कर देना चाहते हैं क्योंकि वह पीएम नरेंद्र मोदी को सहन नहीं कर पा रहे हैं। राहुल गांधी जिन्होंने भारतीय संविधान के तहत भारत की अखंडता और संप्रभुता को बनाए

रखने की शपथ ली है। वह अगर भार विरोधी ताकतों का सहारा लेते हैं तो यह चिंता का विषय है। पीएम नरेंद्र मोदी को हरान के लिए राहुल गांधी ने विदेशी ताकतों का सहारा लिया है। उन्होंने कहा कि वह केवल पीएम नरेंद्र मोदी के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि भारत के लोकतंत्र को खत्म करना चाहते हैं, क्योंकि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ग्लोबल लीडर बनकर उभरा है और उसे राहुल गांधी पचा नहीं पा रहे हैं।

गौरव भाटिया का यह बयान तब आया है जब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस बात की घोषणा की कि अमेरिका ने भारत में वोटर टर्नआउट के लिए 21 मिलियन अमेरिकी डॉलर दिया है।

### दो-भाषा नीति का पालन करेगा तमिलनाडु

**विवादों के बीच उदयनिधि का बड़ा बयान**

**चेन्नई (एजेंसी)।** राष्ट्रीय शिक्षा नीति यानी कि एनईपी से जुड़े विवादों के बीच तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन पर हमला करने को लेकर डिप्टी सीएम उदयनिधि स्टालिन ने बड़ा बयान दिया है। उदयनिधि ने शुक्रवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर पलटवार करते हुए कहा कि तमिलनाडु सिर्फ 'दो-भाषा' नीति का पालन करेगा और वह हमेशा से 'तीन-भाषा नीति का विरोध करता रहा है'। उन्होंने कहा कि राज्य केंद्र से केवल अपने द्वारा दिए गए टैक्स में से अपना जायज हक मांग रहा है।

उदयनिधि ने कहा, 'हम अपना हिस्सा, करीब 2150 करोड़ रुपये मांग रहे हैं। केंद्र चाहता है कि हम एनईपी और 'तीन भाषा' नीति को स्वीकार करें। तमिलनाडु हमेशा से तीन भाषा नीति का विरोध करता रहा है, इसलिए इसमें राजनीति करने की क्या बात है? शिक्षा तमिलों का अधिकार है, कृपया समझें कि राजनीति कौन कर रहा है।' इससे पहले दिन में, प्रधान ने एनईपी लागू करने पर जारी विवाद को लेकर स्टालिन

पर निशाना साधा और उन पर 'राजनीतिक विमर्श बनाए रखने के लिए प्रगतिशील सुधारों को खतरे में डालने' का आरोप लगाया। स्टालिन को लिखी चिट्ठी में प्रधान ने कहा कि तमिलनाडु के मुख्यमंत्री को राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर युवा शिक्षार्थियों के हितों के बारे में सोचना चाहिए, जिन्हें नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से फायदा होगा। शिक्षा मंत्री स्टालिन द्वारा गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लिखे गए पत्र का जवाब दे रहे थे। अपने पत्र में स्टालिन ने कहा था कि 2 केंद्र प्रायोजित पहलों, समग्र शिक्षा अभियान और पीएम श्री स्कूल, को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ जोड़ना मौलिक रूप से अस्वीकार्य है।

तमिलनाडु के सीएम को लिखे अपने पत्र में प्रधान ने कहा, 'पीएम को भेजा गया पत्र मोदी सरकार द्वारा प्रोत्साहित सहकारी संघवाद की भावना के बिल्कुल विपरीत है। इसलिए, राज्य के लिए एनईपी 2020 को अदूरदर्शी दृष्टि से देखना और अपने राजनीतिक विमर्श को बनाए रखने के लिए प्रगतिशील शैक्षिक सुधारों को खतरे में डालना गलत है।'

### पुनर्विकसित त्रिपुरेश्वरी मंदिर का उद्घाटन कर सकते हैं मोदी

**जानें इस शक्ति पीठ के बारे में खास बातें**

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगामी 7 अप्रैल को त्रिपुरा के गोमती जिले में पुनर्विकसित त्रिपुरेश्वरी मंदिर का उद्घाटन कर सकते हैं। त्रिपुरा सरकार के एक मंत्री ने इस बारे में जानकारी दी है। बता दें कि त्रिपुरेश्वरी मंदिर भारत के 51 'शक्ति पीठों' में से एक है। इस मंदिर को केंद्र सरकार की 'प्रसाद' योजना के अंतर्गत 54 करोड़ रुपये की लागत से पुनर्विकसित किया गया है।

आइए जानते हैं इस बारे में विस्तार से। त्रिपुरा के वित्त मंत्री प्राणजीत सिंह रॉय ने बताया है कि पीएम मोदी ने प्रसाद योजना के तहत त्रिपुरेश्वरी मंदिर के पुनर्विकास के लिए धनराशि को मंजूरी दी थी। राज्य के लोग चाहते हैं कि वह मंदिर का उद्घाटन करें। बता दें कि प्रसाद योजना केंद्र सरकार के पर्यटन मंत्रालय की एक योजना है। इस योजना का मकसद भारत

में स्थित तीर्थ स्थलों को विकसित करना है।

वित्त मंत्री प्राणजीत सिंह रॉय ने जानकारी दी है कि त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने दिल्ली में पीएम मोदी से मिलकर उन्हें मंदिर का उद्घाटन करने का न्योता दिया था। पीएम मोदी ने सीएम को मंदिर के उद्घाटन के लिए एक संभावित तारीख तय करने को कहा था और वह इसकी पुष्टि करेंगे। वित्त मंत्री ने बताया है कि निर्माण एजेंसी 20 मार्च तक पुनर्विकसित मंदिर को सौंप देगी। मंदिर के उद्घाटन की संभावित तारीख 7 अप्रैल तय की गई है। त्रिपुरा सरकार की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, महाराजा धन्य माणिक्य ने त्रिपुर सुंदरी मंदिर की स्थापना साल 1501 में की थी। वह बांग्लादेश के चटगांव से लाल काले रंग की कस्ती पत्थर से बनी माता त्रिपुर सुंदरी की मूर्ति लेकर आए थे और इस मंदिर में स्थापित किया। इस मंदिर को देश के 51 शक्ति पीठों में से एक माना जाता है। बता दें कि शक्ती पीठ उन स्थानों को कहा जाता है जहां जहां देवी सती के शरीर के अंग गिरे थे। ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव के तांडव के दौरान देवी सती का दाहिना पैर यहां गिरा था।

### कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष सहित 6 विधायकों के खिलाफ एक्शन

**जयपुर (एजेंसी)।** राजस्थान विधानसभा में शुक्रवार को कथित अशोभनीय व निंदनीय आचरण करने के लिए कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा सहित पार्टी के 6 विधायकों को बजट सत्र की शेष अवधि के लिए निलंबित करने का प्रस्ताव पारित किया गया। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सरकारी मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग द्वारा रखे गए इस आशय के प्रस्ताव के पारित होने की घोषणा की। इसके बाद सदन की कार्यवाही 24 फरवरी तक के लिए स्थगित कर दी गई।

मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने विधायकों के निलंबन का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा, %%मैं निवेदन करता हूं कि प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा सदन में अशोभनीय और निंदनीय आचरण किए जाने के फलस्वरूप निम्नांकित माननीय सदस्यों को मौजूदा बजट सत्र की शेष अवधि के लिए निर्लबित किया जाए- गोविंद सिंह डोटासरा, रामकेश मीणा, अमीन कागजी, जाकिर हुसैन, हाकिम अली व संजय कुमार।%% विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने इस प्रस्ताव को ध्वनिमत से पारित हुआ घोषित किया। इसके बाद सदन की कार्यवाही 24 फरवरी सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई।

## सांस्कृतिक गतिविधियां छात्राओं के समग्र विकास में मददगार होती हैं -ऊर्जा मंत्री तोमर

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** शिक्षा संस्थानों में सांस्कृतिक गतिविधियां, छात्राओं के समग्र विकास में मदद करती हैं। ये गतिविधियां, छात्रों को अपनी आलोचनात्मक सोच का विकास करने में मदद करती हैं और उन्हें अपने आस-पास की दुनिया को बेहतर समझने में मदद करती हैं। यह बात ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने उप नगर ग्वालियर के वीरांगना झलकारी बाई शासकीय कन्या महाविद्यालय के वार्षिक पुरुस्कार वितरण समारोह कही। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर द्वारा महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में विजेता रहीं छात्राओं प्रिया नरवरिया, वर्षा पाल, हर्षिता शर्मा, स्नेहा यादव, सुमन, दीप्ति श्रीवास तथा अंशिका को पुरुस्कृत कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

## पश्चिम क्षेत्र विद्युत कंपनी के सभी जिला मुख्यालयों पर स्मार्ट मीटर स्थापना

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा पंद्रहवें जिला मुख्यालय बुरहानपुर में भी अत्याधुनिक स्मार्ट मीटर लगाने का कार्य विधिवत प्रारंभ कर दिया गया है। यहां एक हजार स्मार्ट मीटर स्थापित कर दिए गए हैं। इससे पहले इंदौर, उज्जैन, देवास, शाजापुर, आगर, रतलाम, मंदसौर, नीमच, खरगोन, खंडवा, बड़वानी, आलीराजपुर, झाबुआ, धार में स्मार्ट मीटर स्थापित करने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया था। कंपनी के झाबुआ और खरगोन जिला मुख्यालय शत प्रतिशत स्मार्ट मीटर वाले शहर घोषित कर दिए गए हैं। कंपनी क्षेत्र में सबसे ज्यादा स्मार्ट मीटर इंदौर शहर में 4.75 लाख स्थापित कर दिए गए हैं। वहीं कंपनी क्षेत्र के 45 नगरीय निकायों में अब तक 10 लाख 50 हजार से ज्यादा स्मार्ट मीटर स्थापित कर दिए गए हैं। प्रतिदिन स्मार्ट मीटरीकरण का कार्य जारी हैं।

## शिक्षकों के 7वें वेतनमान के एरियर को लेकर डीपीआई सख्त

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** मध्य प्रदेश के करीब 10 हजार शिक्षकों (प्राथमिक शिक्षक, माध्यमिक शिक्षक और उच्च माध्यमिक शिक्षक) को 7वें वेतनमान की एरियर राशि का भुगतान 23 फरवरी तक अनिवार्य रूप से कर दिया जाएगा। एरियर राशि का भुगतान न होने की लगातार सामने आ रही शिकायतों के बीच लोक शिक्षण संचालनालय (डीपीआई) ने यह आदेश जारी किए हैं। पांचवीं और अंतिम किस्त के रूप में इन शिक्षकों को 15 से 25 हजार रुपए मिलेंगे। अपर संचालक वित्त ने सभी संभागीय संयुक्त संचालक और जिला शिक्षा अधिकारी की जिम्मेदारी तय कर दी है। भुगतान में देरी होने पर उन्हें संबंधित आहरण संवितरण अधिकारी (डीडीओ) के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। बता दें कि नवीन शैक्षणिक संवर्ग में 2 लाख 87 हजार शिक्षक हैं। जिन्हें 1 जुलाई 2018 में इस संवर्ग में शामिल किया गया है। इसके साथ ही इन शिक्षकों को 7वें वेतनमान का लाभ भी दिया गया। उनका एरियर 80 हजार से 1.50 लाख रुपए बना। जिसे हर साल एक किस्त के हिसाब से पांच किस्तों में देने के निर्देश दिए गए थे। पांचवीं किस्त अप्रैल 2024 में दी जाना थी, जो कई जिलों में नहीं दी गई। करीब 5000 शिक्षकों ने विभिन्न स्तरों पर इसकी शिकायत की थी।

## ऑनलाइन पोर्टल पर सार्वजनिक हुई अस्पतालों की जानकारी

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** मध्यप्रदेश में सभी नर्सिंग होम (अस्पतालों) के डॉक्टरों और नर्सिंग स्टाफ की जानकारी एक बार फिर से ऑनलाइन पोर्टल पर सार्वजनिक कर दी गई है। एनएसयूआई ने हाल ही में स्वास्थ्य विभाग से इसकी मांग की थी। 31 जनवरी को एनएसयूआई के प्रदेश उपाध्यक्ष रवि परमार ने यह मुद्दा उठाते हुए आरोप लगाया था कि, प्रदेश के अस्पतालों से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी ऑनलाइन पोर्टल से हटा दी गई है। उन्होंने इसे स्वास्थ्य सेवाओं की पारदर्शिता पर सीधा हमला बताया और दावा किया कि, यह कदम अनियमितताओं और गड़बड़ियों को छिपाने के उद्देश्य से उठाया गया था। जनता को सही जानकारी से वंचित रखने के इस फैसले के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था।

## 8 माह से वेतन नहीं मिलने पर कर्मचारियों का विरोध

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** मध्य प्रदेश जनजातीय कार्य विभाग के दैनिक वेतन भोगी, अंशकालीन और स्थाई कर्मचारियों को पिछले 8 माह से वेतन नहीं दिया गया है। जिससे कर्मचारियों की आर्थिक स्थिति खराब हो गई है। इन कर्मचारियों ने वेतन की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया और विभाग के प्रमुख सचिव से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा। आखिर प्रमुख सचिव के निर्देश पर आयुक्त ने 25 फरवरी तक 8 माह का वेतन देने के आदेश जारी किए हैं। मध्य प्रदेश कर्मचारी मंच के प्रांताध्यक्ष अशोक पांडे और धार जिला अध्यक्ष महेंद्र सारस ने बताया कि 8 माह से वेतन नहीं मिलने से कर्मचारियों की स्थिति बेहद खराब हो गई थी। इस संबंध कर्मचारी मंच ने वरिष्ठ अधिकारियों को इस मामले में लिखित शिकायत की थी। इसके बाद प्रमुख सचिव ने तुरंत आयुक्त को वेतन भुगतान के आदेश दिए। अब पांच दिन के भीतर सभी कर्मचारियों को उनका बकाया वेतन मिल जाएगा।पांडे ने बताया कि विभाग में अनियमित कर्मचारियों के वेतन के लिए बजट आवंटन में देरी एक बड़ी समस्या रही है।

# मुख्य सचिव जैन ने ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट तैयारियों की समीक्षा की

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने भोपाल में आयोजित होने जा रही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने कलेक्टर भोपाल एवं पुलिस-कमिश्नर को निर्देशित किया कि जीआईएस के दौरान होने वाली परीक्षाओं में कोई अवरोध नहीं हो।

इसका विशेष ध्यान रखा जाये, कोई भी विद्यार्थी परीक्षा केंद्र तक जाने से वंचित न रह जाये।

मुख्य सचिव श्री जैन ने यातायात व्यवस्था, पार्किंग, ई-बस, ई-कार्ड, बैठक व्यवस्था, होटल, स्वास्थ्य, मेहमानों के भोजन, आकस्मिक प्लान, प्रधानमंत्री की आगमन-प्रस्थान व्यवस्था के संबंध में जानकारी प्राप्त कर निर्देशित किया कि सभी अधिकारी अपने दायित्वों को समझकर निर्वहन करें। टीम वर्क के साथ कार्य करें जिससे प्रदेश के आर्थिक विकास में वृद्धि हो सके। बैठक में स्वास्थ्य, नवकरणीय ऊर्जा, नगरीय प्रशासन, कौशल विकास, उद्यानिकी, खनिज साधन, पर्यटन एवं एमएसएमई विभागों ने प्रेजेंटेशन देकर अपनी तैयारियों की जानकारी दी। बैठक में अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, श्री अशोक बर्णवाल, श्री मनु श्रीवास्तव, श्री अनुपम राजन, प्रमुख सचिव श्री संजय शुक्ल, श्री उमाकांत उमराव, श्री राघवेन्द्र सिंह सचिव, श्री सुदाम पी. खाड़े, श्री एम. रघुराज कलेक्टर भोपाल एवं पुलिस कमिश्नर उपस्थित थे।

## सहकारिता में निवेश और नवाचार को मिलेगा बढ़ावा-मंत्री सारंग

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-भोपाल में सहकारिता विभाग के विशेष सत्र की तैयारियों को लेकर विभागीय अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठक की। बैठक में मंत्री श्री सारंग ने सहकारिता क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए पब्लिक को-ऑपरेटिव पार्टनरशिप (पीसीपी) मॉडल को अपनाने के साथ देश की प्रतिष्ठित कंपनियों के साथ एमओयू कर पैक्स द्वारा निर्मित उत्पादों के विपणन को लेकर भी दिशा-निर्देश दिये। बैठक में अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल, अपेक्स बैंक के प्रभारी प्रबंध संचालक श्री मनोज कुमार गुप्ता, बीज संघ के प्रबंध संचालक श्री महेंद्र दीक्षित उपस्थित रहे। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि सहकारिता क्षेत्र को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए पीसीपी मॉडल को बढ़ावा दिया जायेगा। इस मॉडल में सहकारी समितियों को उद्यमशीलता की दिशा में आगे बढ़ाते हुए उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जायेगा। इससे प्रदेश के किसान, सहकारी संस्थाएँ और उपभोक्ता सीधे लाभान्वित होंगे। बैठक में कंप्रेस्ड बॉयो गैस (सीबीजी) प्लांट की स्थापना की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रदेश में सीबीजी प्लांट स्थापित करने की अपार संभावनाएँ हैं। इन संयंत्रों की स्थापना में प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों (पैक्स) की भागीदारी सुनिश्चित की जायेगी। इससे किसान अपने फसल अवशेषों और अन्य जैविक कचरे का उपयोग कर आर्थिक रूप से सशक्त बन सकेंगे। मंत्री श्री सारंग ने बैठक में सहकारी समितियों द्वारा निर्मित उत्पादों के विपणन को लेकर भी चर्चा की। उन्होंने निर्देश दिए कि देश की प्रमुख कंपनियों के साथ एमओयू किये जायें, जिससे पैक्स के माध्यम से तैयार किये गये उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिले और उनकी बिक्री को भी बढ़ावा मिले। मंत्री श्री सारंग ने पीसीपी मॉडल में सहकारी चीनी मिलों के विस्तार और उनके आधुनिकीकरण की आवश्यकता पर भी ध्यान दिलाया।

## सहकारिता मंत्री सारंग को स्कॉच अवॉर्ड सौंपा

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग को गुरुवार को मंत्रालय में प्रबंध संचालक विपणन संघ श्री आलोक कुमार सिंह ने नई दिल्ली में प्राप्त स्कॉच'' अवॉर्ड सौंपा। नई दिल्ली के इण्डिया हेबिटेड सेंटर में आयोजित 100वें राष्ट्रीय स्कॉच समिट में मध्यप्रदेश के सहकारिता विभाग के राज्य सहकारी विपणन संघ (मार्कफेड) को उनके फर्टिलाइजर सप्लाई चैन ऑटोमेशन प्रोजेक्ट आईएफएसएस को प्रतिष्ठित स्कॉच अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। प्रबंध संचालक विपणन संघ श्री सिंह की ओर से आईएफएसएस प्रोजेक्ट हेड श्रीमती मंदिरा लोध एवं प्रोजेक्ट मैनेजर श्री नितेन्द्र सिंह द्वारा अवॉर्ड ग्रहण किया गया।

मंत्री श्री सारंग द्वारा खाद वितरण व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये सूचना प्रौद्योगिकी तकनीक का उपयोग कर उर्वरक वितरण प्रणाली को सुव्यवस्थित करने के निर्देश उर्वरक वितरण की नोडल एजेंसी विपणन संघ को दिये गये थे। मंत्री श्री सारंग के नेतृत्व में विपणन संघ की आईटी टीम द्वारा आईएफएसएस एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर का इनहाउस विकास किया गया।

इस एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर में उर्वरक सप्लाई चैन के 6 हजार से अधिक हितधारक (सभी फर्टिलाइजर कम्पनियाँ, मार्कफेड, अपेक्स बैंक एवं उनकी 900 से अधिक ब्रांच तथा 4500 से अधिक पीएसीएस) आईएफएसएस एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर के सिंगल प्लेटफार्म पर कार्य कर रहे हैं। प्रदेश में लगभग 60 लाख मीट्रिक टन से अधिक उर्वरक की आवक से लेकर प्राथमिक सहकारी समितियों के माध्यम से कृषकों तक उर्वरक आपूर्ति की रियल टाइम पर केन्द्रीकृत मॉनीटरिंग की जा रही है।

# ग्वालियर को हर दृष्टिकोण से आदर्श शहर बनायेंगे-ऊर्जा मंत्री तोमर

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने ग्वालियर शहर के वार्ड-33 के अंतर्गत लक्ष्मण तलैया जीर्णोद्धार कार्य व सीसी रोड निर्माण सहित अन्य विकास कार्यों का भूमि-पूजन किया। यह कार्य एक करोड 51 लाख रूपये की लागत से होने जा रहे हैं। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि उपनगर ग्वालियर में विकास के नये नये आयाम लिखे जा रहे हैं।

इसी क्रम में लक्ष्मण तलैया जैसे ऐतिहासिक स्थल का जीर्णोद्धार होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है, ग्वालियर हर दृष्टिकोण से एक आदर्श शहर बने, जहां हर नागरिक को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हों।

मंत्री श्री तोमर ने कहा कि लक्ष्मण तलैया के जीर्णोद्धार के साथ-साथ यहाँ पर एलईडी लाइट, वाटर फाउंटेन, बेंच, शौचालय, बच्चों के खेलने के लिए ग्राउंड आदि कार्य कराये जाएगें। सरकार का प्रयास है कि लक्ष्मण तलैया एक टूरिस्ट प्लेस बने और पर्यटक लक्ष्मण तलैया को देखने आएं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि जीर्णोद्धार के साथ ही इसके रखरखाव की जिम्मेदारी भी तय की जाए। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि ग्वालियर का वैभव पुराने स्वरूप में दिखे। इसी उद्देश्य से सरकार द्वारा एतिहासिक स्थलों को संवारने का कार्य किया जा रहा है।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने खल्लासीपुरा पम्प हाउस से नौगजा रोड एवं आसपास की गलियों में सीसी रोड निर्माण कार्य का भूमि पूजन करते हए कहा कि शहर को स्वच्छ, स्वस्थ एवं हरा भरा बनाये रखने के लिए आमजन को स्वच्छता में सहयोग करना होगा। इस बार शहर को स्वच्छता में अव्वल स्थान पर लाना है। इसके लिए हमें अपने घरों से स्वच्छता की आदत डालनी होगी। कहीं भी कचरा न फेंके, कचरा सिर्फ कचरा वाहन में ही डालें। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

## पर्यावरण प्रदूषण एवं ईंधन की निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से 5 शहरों में लागू होगी नयी इलेक्ट्रिक मोटर व्हीकल पॉलिसी

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** राज्य शासन द्वारा नगरीय क्षेत्रों में सुरक्षित, सुगम एवं किफायती परिवहन के लिये इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी 2025 तैयार की गई है। इसका उददेश्य पर्यावरण प्रदूषण एवं ईंधन की निर्भरता को कम कर गैर-ईंधन वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित करना है। वर्ष 2019 में लागू इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी की अवधि समाप्त होने के बाद इस नवीन नीति में दोपहिया, तिपहिया वाहन, कार-बस, हल्के वाणिज्यिक वाहन ट्रक, ट्रैक्टर एवं एम्बुलेंस को शामिल किया गया है। पंच वर्षीय इस नीति में प्रदेश के प्रमुख संभागों भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर एवं उज्जैन को मॉडल इलेक्ट्रिक व्हीकल शहर घोषित किए गए हैं। इसके अंतर्गत इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा दिये जाने के उद्देश्य से इलेक्ट्रिक रोड मेप तैयार किया गया है। इस योजना में 80 प्रतिशत शासकीय वाहनों को इलेक्ट्रिक वाहन के रूप में परिवर्तित किये जाने का लक्ष्य रखा गया है। शासन द्वारा इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहित करने के लिये वित्तीय प्रोत्साहन का प्रावधान रखा गया है, जिसमें नियामक रूप में ई-वाहनों के लिये पंजीकरण शुक्ल में छूट एवं डीजल-पेट्रोल वाहनों को इलेक्ट्रिक वाहन में कन्वर्ट करने के?लिये एक वर्ष के लिये रेट्रोफिटिंग प्रोत्साहन राशि का प्रावधान भी रखा गया है। ई-वाइनों की विशेष पहचान के लिये ग्रीन नंबर प्लेट लगवाई जा रही है। निजी उपयोग वाले ई-वाहनों को हरी नंबर प्लेट पर सफेद अक्षर एवं कॉमर्शियल उपयोग के वाहनों को हरी नंबर प्लेट पर पीले अक्षर निर्धारित किये गये हैं। ई-व्ही मॉडल शहरों में इलेक्ट्रिक वाहनों की पार्किंग के लिये पृथक से स्थान सुरक्षित रखे जायेंगे। ई-मोबिलिटी जोन निर्माण के लिये धार्मिक एवं पुरातात्विक महत्व के पर्यटक गांव, प्रौद्योगिकी केन्द्र एवं विशेष आर्थिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र सुरक्षित रखे गये हैं।

# निरोगी काया अभियान का हुआ शुभारंभ - 31 मार्च तक चलेगा अभियान

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** असंचारी रोगों की स्क्रीनिंग के लिए निरोगी काया अभियान की शुरुआत 20 फरवरी से की गई। 31 मार्च तक चलने वाले इस विशेष अभियान में 30 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज स्क्रीनिंग की जाएगी तथा पीड़ित पाए जाने पर निःशुल्क उपचार दिया जाएगा।

अभियान के पहले दिन मिशन संचालक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन श्रीमती सलोनी सिडाना, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी, उप संचालक असंचारी रोग नियंत्रण कार्यक्रम डॉ. आशीष सक्सेना, उप संचालक शहरी स्वास्थ्य डॉ. मनीष सिंह सहित अन्य अधिकारियों ने विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों में पहुंचकर अभियान में दी जा रही सेवाओं की जानकारी ली। इस अवसर पर मिशन संचालक राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन श्रीमती सलोनी सिडाना ने भोपाल के प्रियदर्शनी मुख्यमंत्री संजीवनी केंद्र में हितग्राहियों से बात कर अभियान के तहत दी जा रही सेवाओं का फीडबैक लिया। साथ ही आशा कार्यकर्ताओं से समुदाय स्तर पर दी जा रही एन सी डी सेवाओं के बारे में विस्तारपूर्वक

जानकारी ली। मिशन संचालक ने निर्देश दिए कि अभियान हेतु लक्षित शत - प्रतिशत नागरिकों तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित की जाए। अभियान के शत - प्रतिशत लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए राज्य, जिला और विकासखंड स्तरीय अधिकारियों द्वारा संस्थाओं और फील्ड पर जाकर समीक्षा की जा रही है। अभियान के पहले दिन मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी द्वारा स्वास्थ्य संस्थाओं में की जा रही स्क्रीनिंग की मॉनिटरिंग की गई। उप संचालक असंचारी रोग नियंत्रण कार्यक्रम डॉ.आशीष सक्सेना द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रातीबड़, उपसंचालक शहरी स्वास्थ्य डॉ. मनीष सिंह द्वारा मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक राहुल नगर, जिला कार्यक्रम प्रबंधक श्रीमती अनिता दुगाया और सहायक प्रबंधक श्रीमती अर्पिता सिंह द्वारा मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक चाँदबड़ में पहुंचकर अभियान में दी जा रही सेवाओं की समीक्षा की। अभियान के तहत असंचारी रोग स्क्रीनिंग के लिए आयुष्मान आरोग्य मंदिरों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक पर जांच शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। हितग्राहियों की जांच और उपचार की रिपोर्ट एन सी डी पोर्टल में दर्ज की जा रही है। रोगों की पहचान होने पर त्वरित रूप से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, सिविल अस्पतालों अथवा जिला चिकित्सालय में उपचार प्रारंभ किया जाएगा। नए मरीजों की पहचान के लिए आशा कार्यकर्ताओं द्वारा घर-घर जाकर सीबैक फॉर्म में जानकारी इकट्ठे की जा रही है। सीबैक फॉर्म से प्राप्त जानकारी के आधार पर असंचारी रोग स्क्रीनिंग एवं पंजीयन किया जाएगा।

# अनमोल आरसीएच पोर्टल के नवीन संस्करण 2.0 का प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

**मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)।** लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा विकसित अनमोल आरसीएच पोर्टल के नवीन संस्करण 2.0 को लागू करने हेतु जिलों के प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम भोपाल में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के प्रथम चरण में 138 प्रशिक्षकों को नवीन अनमोल मोबाइल एप्लिकेशन एवं वेबपोर्टल के उपयोग की विस्तृत जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में एमडी एनएचएम डॉ. सलोनी सिडाना ने कहा कि अनमोल ऐप के विधिवत उपयोग से बेहतर मॉनिटरिंग सुनिश्चित होगी। जिससे गर्भवती महिलाओं, प्रसूताओं और नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य का बेहतर प्रबंधन होगा। अनमोल आरसीएच पोर्टल एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जो गर्भवती महिलाओं, नवजात शिशुओं और प्रसूताओं को दी जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं की ट्रैकिंग और प्रबंधन को सरल बनाता है। नवीन संस्करण में गर्भवती महिलाओं के पंजीकरण, हाई-रिस्क गर्भावस्था की पहचान, प्रसव संबंधी रिकॉर्ड, नवजात एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं की एंट्री की प्रक्रिया को अधिक सुगम बनाया गया है। इससे जिले और राज्य स्तर पर इन सेवाओं की प्रभावी निगरानी की जा सकेगी। यह पोर्टल मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के उद्देश्य से मातृ शिशु संजीवन मिशन के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके माध्यम से जननी सुरक्षा योजना और प्रसूति सहायता योजना के भुगतान को समग्र ई-केवाईसी आधारित बनाया गया है, जिससे पात्र हितग्राहियों को समय पर और पात्रतानुसार राशि का भुगतान सुनिश्चित किया जा सकेगा।

# ऑर्केस्ट्रा डांसर से जंगल में गैंगरेप

## साथी बोला- बदमाशों ने मुझे पीटा, युवती को घसीटा, थाने में शिकायत की तो पुलिस ने भी पीटा

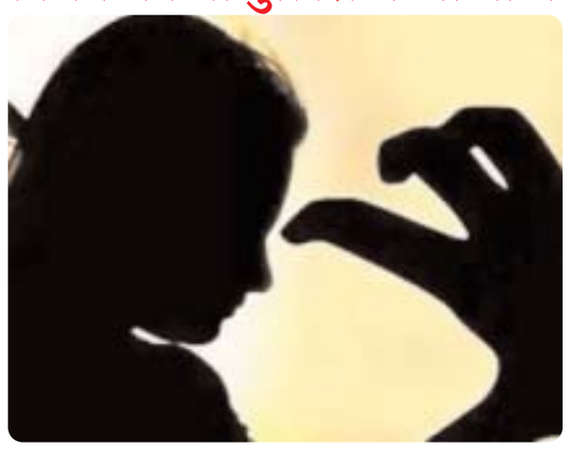

**मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)।** सिंगरौली में ऑर्केस्ट्रा डांसर के साथ गैंगरेप का मामला सामने आया है। 22 साल की युवती एक कार्यक्रम में डांस करने के बाद साथी के साथ लौट रही थी। रास्ते में बाइक सवार छह बदमाशों ने उन्हें रोक लिया। साथी के साथ मारपीट की। युवती को जंगल में घसीटकर ले गए। आरोपी कार्यक्रम में मौजूद थे, वे डांस कर रही लड़कियों पर कमेंट कर रहे थे। इसके बाद पीछा करने लगे। घटना बुधवार देर रात की है। पीड़िता के साथी का आरोप है कि पुलिस ने जंगल में युवती को तलाश करने के बजाय उसे थाने में बिठाए रखा और मारपीट की।

वहीं, आरोपों को लेकर पुलिस कुछ भी नहीं कह रही है। गुरुवार को पीड़िता माड़ा पुलिस थाने पहुंची। रात करीब 10 बजे केस दर्ज किया गया। शुक्रवार को पुलिस ने छह आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

**सहेलियों के साथ डांस करने गई थी पीड़िता:** पुलिस के मुताबिक शितूल गांव के रहने वाले देव कुमार शाह के घर बुधवार को छठी (बारहो संस्कार) कार्यक्रम था। इसके लिए सरई इलाके से ऑर्केस्ट्रा बुलाया गया था। इसमें अपनी बहन के साथ पीड़ित और अन्य युवती भी पहुंची थी। रात तकरीबन 10 बजे से 1 बजे तक डांस प्रोग्राम चला।

तीनों एक साथ रात करीब डेढ़ बजे चार साथियों के साथ चार बाइक से घर के लिए निकले। सभी आगे-पीछे चल रहे थे। दो बाइक सवार के साथ पीड़िता की बहन आगे निकल गई। तीसरी बाइक पर पीड़िता साथी के साथ, चौथी पर अन्य साथी पीछे आ रहे थे।

**जबरन बाइक से उतारकर ले गए आरोपी:** रजमिलान चौराहे के पास चार बाइक पर सवार 8 से 10 बदमाशों ने ओवरटेक कर रोक लिया। दोस्त ने विरोध किया, तो उसके साथ मारपीट की। युवती को जबरन बाइक उतारकर अपने साथ सखौहां शिव मंदिर के पास जंगल में ले गए। वहां छह लोगों ने बारी-बारी से दुष्कर्म किया। आरोपियों ने युवती का फोन भी छीन लिया।

**दोस्त बोला- पुलिस आधे घंटे बाद पहुंची:** युवती के साथी युवक ने बताया, आरोपियों के युवती को ले जाने के बाद चौथी बाइक पर बैठे साथी वहां पहुंचे। हमने तुरंत कंट्रोल रूम को सूचना दी। आधे घंटे बाद पुलिस मौके पर पहुंची। युवती को तलाश करने के बजाय पुलिस हम तीनों को भदौरा चौकी ले गई। यहां से पुलिस ने साथी युवती को घर भेज दिया। हम दोनों लड़कों को बिठा लिया। पुलिस हमसे ये कहते हुए मारपीट करती रही कि हमने ही कुछ किया है।

**लिफ्ट लेकर घर पहुंची पीड़िता:** सुबह 6 बजे आरोपी युवती को उसी हालत में छोड़कर भाग गए। पीड़िता ट्रक ड्राइवर से लिफ्ट लेकर घर पहुंची। उसने बड़ी बहन को पूरी घटना बताई। इसके बाद ऑर्केस्ट्रा में काम करने वाले साथियों और बहन के साथ थाने पहुंची। दिनभर पड़ताल के बाद रात करीब 10 बजे पुलिस ने केस दर्ज किया। रात करीब 11 बजे के बाद मेडिकल परीक्षण किया गया।

**पीड़ित की बड़ी बहन ऑर्केस्ट्रा की मालकिन:** पीड़िता के साथी युवक ने बताया कि पीड़िता की बड़ी बहन ऑर्केस्ट्रा की संचालक है। उसी ने 3500 रुपए में बुकिंग ली थी। इनमें से तीन हजार रुपए मिल गए थे, जबकि 500 रुपए शुक्रवार को देना तय हुआ था।

युवक ने यह भी बताया कि आरोपी गांव में कार्यक्रम के दौरान भी डांस करने की जिद करते हुए बार-बार कमेंट कर रहे थे। आरोपी शितूल गांव से ही पीछा कर रहे थे। अनहोनी की आशंका के चलते हम लोग गांव के पास के पेट्रोल पंप में थोड़ी देर के लिए रुके भी थे। यहां भी आरोपी कमेंट करते रहे।

एसपी मनीष खत्री ने बताया कि आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पूछताछ की जा रही है। कोर्ट में युवती के बयान दर्ज होने के बाद ही ज्यादा कुछ बता पाएंगे।

## हत्या के प्रयास में 5 आरोपी गिरफ्तार, अवैध कट्टा बरामद

### विवाद के दौरान किया था फायर, निशाना चुकने से बची जान

**मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)।** छतरपुर के सिविल लाइन थाना क्षेत्र में हत्या के प्रयास का मामला सामने आया है। पुलिस ने शुक्रवार को मुख्य आरोपी समेत पांच को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। घटना में प्रयुक्त अवैध देसी कट्टा और मिस फायर कारतूस भी बरामद किया गया है।

थाना प्रभारी बाल्मिक चौबे ने बताया कि दो दिन पहले मुक्तिधाम तिगड्डे के पास सागर रोड पर विवाद के दौरान फरियादी मिथिलेश द्विवेदी पर कट्टे से फायर किया गया। इस दौरान गोली निशाना चूक गई। पुलिस ने हत्या के प्रयास और आयुध अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई की।

**5 को गिरफ्तार कर भेजा जेल:** पुलिस ने मुख्य आरोपी दिनकर गोस्वामी को गिरफ्तार कर पूछताछ की, जिसमें चार अन्य आरोपियों के नाम सामने आए। इनमें शिवम उर्फ टिक्की गोस्वामी, दुर्गेश द्विवेदी, विजय श्रीवास और शहीद मंसूरी शामिल हैं। सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। मामले की जांच जारी है।

**आरोपियों पर पहले से आपराधिक मामले दर्ज:** जांच में पता चला कि दिनकर गोस्वामी पहले भी मारपीट के एक मामले में शामिल रहा है, जबकि शिवम उर्फ टिक्की गोस्वामी के खिलाफ पहले से चार आपराधिक मामले दर्ज हैं।

## बागेश्वर धाम में 8 दिन तक आयोजित होंगे कार्यक्रम

**मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)।** बागेश्वर धाम में 19 से 26 फरवरी तक कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। 23 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 100 बेड के कैंसर अस्पताल का शिलान्यास करेंगे। कार्यक्रम के समापन पर 26 फरवरी को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 251 कन्याओं को आशीर्वाद देंगी।

**इन तारीखों में ये आयोजन होंगे:** कार्यक्रम की शुरुआत 19 फरवरी को कॉलेज से निकाली गई यात्रा से हुई। 20 फरवरी को भारत और विदेशों से शिष्य मंगल धाम पहुंचे। 21 और 22 फरवरी को गुरु दीक्षा महोत्सव और रामलीला का आयोजन किया जा रहा है। 22 से 25 फरवरी तक दीदी मां की प्रवचन माला का आयोजन होगा। 24 फरवरी को प्रख्यात संत अवधेशानंद गिरि महाराज प्रवचन देंगे।

**कन्याओं के लिए उपहार मैदान बनाए गए:** कार्यक्रम स्थल पर 18 पुराण के लिए झोपड़ियां और कन्याओं के लिए उपहार मैदान बनाए गए हैं। स्थानीय आयोजक सुरेश कुमार चौबे ने बताया कि डीजे-बाजे के साथ शहर में लोगों को पीले चावल बांटकर कार्यक्रम में आने का निमंत्रण दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि लोग कन्या विवाह में शामिल होकर पुण्य लाभ कमा सकते हैं।

## बिना परमिट चल रही 4 स्कूल बस जब्त

### 11 के बनाए चालान, सिंगरौली ट्रैफिक पुलिस की कार्रवाई

**मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)।** सिंगरौली में यातायात पुलिस ने शुक्रवार को स्कूल वाहनों की जांच की। इस दौरान बिना परमिट चल रही 4 स्कूल बसें जब्त की गईं। साथ ही 11 अन्य स्कूल वाहनों पर चालान की कार्रवाई की गई।

यातायात थाना प्रभारी दीपेंद्र सिंह के नेतृत्व में यह अभियान चलाया गया। पुलिस ने शहर के प्रमुख स्थानों जैसे इंदिरा चौक, पुराना यातायात तिराहा, सेंट जोसेफ स्कूल तिराहा, राजीव चौक, निगाही मोड़ और जयंत बस स्टैंड पर टीमें लगाईं। इन टीमों ने 26 से अधिक स्कूल बस, मैजिक वैन और ऑटो की गहन जांच की।

स्कूल वाहनों के लिए कई नियम निर्धारित हैं। स्कूल बस का पीला रंग होना अनिवार्य है। बस के आगे-पीछे 'स्कूल बस' लिखा होना चाहिए। किराए की बसों पर 'ऑन स्कूल ड्यूटी' का उल्लेख जरूरी है।

सुरक्षा मानकों के तहत बसों में प्राथमिक उपचार किट, स्पीड गवर्नर, अग्निशमन यंत्र और बैग टांगने की व्यवस्था होनी चाहिए। दरवाजों पर मजबूत ताले और खिड़कियों पर जाली लगी होनी चाहिए। बच्चों की देखरेख के लिए प्रशिक्षित अटेंडर की नियुक्ति अनिवार्य है।

चालक के लिए भी कड़े नियम हैं। उसे कम से कम 5 साल का भारी वाहन चलाने का अनुभव होना चाहिए। उस पर कभी तेज गति या अन्य नियम तोड़ने का चालान नहीं हुआ होना चाहिए।

## जादू-टोना के शक में हत्या करने वाले 5 आरोपी गिरफ्तार

### हमलावरों ने महिला के लकवाग्रस्त पति, बेटे और पोते को भी पीटा था

**मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)।** सीधी जिले के पिपरहा गांव में जादू-टोना के शक में बुजुर्ग महिला की हत्या करने के मामले में पुलिस ने पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। इनके नाम पुष्पराज, दिलीप, संतोष, अजय सिंह और इंद्रभान सिंह हैं।

कुसमी थाने की पुलिस के मुताबिक, बुधवार रात करीब 8 बजे पांच ने मिलकर चिराऊंजिया सिंह नाम की महिला की लाठी-डंडों से पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। हमलावरों ने महिला के लकवाग्रस्त पति श्रीमान सिंह, बेटे उदयभान सिंह और पोते पृथ्वीराज सिंह को भी गंभीर रूप से घायल कर दिया था।

पीड़ित परिवार की बहू आराधना सिंह के अनुसार, मेडरा गांव से आए पुष्पराज, दिलीप, संतोष, अजय सिंह और इंद्रभान सिंह ने मिलकर हमला किया। आरोपियों ने पहले लकवाग्रस्त श्रीमान सिंह को मौके पर ही पीटा। फिर उन्हें पिपरहा मोहल्ले में ले जाकर दोबारा मारा। सीधी एसपी डॉक्टर रवींद्र वर्मा ने बताया कि पूछताछ के बाद सभी आरोपियों को कोर्ट में पेश किया जाएगा।

## अवैध रेत परिवहन करते ट्रैक्टर-ट्राली जब्त

### 3 घन मीटर रेत भी बरामद, चालक और मालिक पर केस दर्ज

**मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)।** अनूपपुर पुलिस ने अवैध रेत परिवहन के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। जैतहरी थाना क्षेत्र के वेंकटनगर चौकी पुलिस को 21 फरवरी की सुबह मुखबिर से सूचना मिली। मुखबिर ने बताया कि एक व्यक्ति तिपान नदी के जरेली घाट से अवैध रेत निकालकर आममाडांड ले जा रहा है।

**रेत परिवहन का कोई वैध परमिट नहीं:** सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। वहां एक नीले रंग का सोनालिका कंपनी का ट्रैक्टर मिला। इसमें हरे रंग की ट्राली लगी थी, जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर सीजी 31 बी 3690 था। ट्राली में 3 घन मीटर रेत भरी हुई थी। पुलिस ने ट्रैक्टर को रोककर चालक से पूछताछ की। चालक ने अपना नाम शैलेष सिंह परस्ते बताया। वह आममाडांड का रहने वाला है। पुलिस ने उससे रेत परिवहन के लिए आवश्यक टी.पी. (ट्रांजिट परमिट) मांगा, लेकिन वह पेश नहीं कर सका।

**5.05 लाख रुपए की संपत्ति जब्त:** पुलिस ने मौके पर ही ट्रैक्टर-ट्राली और रेत को जब्त कर लिया। रेत की कीमत 5,000 रुपए और ट्रैक्टर-ट्राली की कीमत 5 लाख रुपए आंकी गई है। कुल जब्त संपत्ति की कीमत 5.05 लाख रुपए है। चालक शैलेष सिंह और वाहन मालिक मंगल सिंह के खिलाफ खनन अधिनियम की धारा 4/21 के तहत केस दर्ज किया गया है। साथ ही उन पर धारा 303(2) और 317(5) बीएनएस के तहत भी कार्रवाई की गई है।

## आधुनिक शिक्षा के साथ हमे प्राचीन पद्धतियों का करना चाहिए अनुसरण : डॉ आई पी प्रजापति

**मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)।** मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार शासकीय महाविद्यालय मड़वास में भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर " भारतीय भाषाएं एवं भारतीय ज्ञान परंपरा " विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन कर के की गई तत्पश्चात तिलक एवं बैच लगाकर अतिथियों का स्वागत किया गया। संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन आज के कार्यक्रम की संयोजिका हिन्दी विभाग की डॉ. निशा सिंह ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बघेली भाषा के आंचलिक कवि रावेंद्र शुक्ला उपस्थित थे। इस अवसर पर उन्होंने मातृभाषा की उपादेयता पर अपनी बात रखी और बघेली पर कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में आंचलिक साहित्यकार डॉ. संतोष तिवारी जी उपस्थित थे। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय भाषा को जोड़ते हुए अपनी बात कही। कार्यक्रम में सह वक्ता के रूप में शोध विद्यार्थी निखिल कुमार उपस्थित थे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में शिक्षक के.के.मिश्र उपस्थित थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता और स्वागत भाषण महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आई.पी.प्रजापति ने की। इस अवसर पर आपने कहा कि आधुनिक शिक्षा के साथ हमे प्राचीन पद्धतियों का अनुसरण करना चाहिये। कार्यक्रम का संचालन भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ की सहायक नोडल अधिकारी डॉ. आकांक्षा मिश्रा ने किया । कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा के नोडल अधिकारी डॉ. दीपक अग्निहोत्री ने किया। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर महाविद्यालय में " तकनीकी युग मे मातृभाषा का अस्तित्व एवं चुनौतियाँ " विषय पर निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कुमारी रूबी साहू द्वितीय स्थान पर रिया केवट ही एवं तृतीय स्थान पर सावित्री विश्वकर्मा थी। कार्यक्रम में डॉ. संगीता मिश्रा डॉ. सौरभी गुप्ता डॉ ज्योति रजक डॉ पूजा गर्ग डॉ कमलेश जायसवाल डॉ सुरेंद्र गुप्ता डॉ राजेश पटेल डॉ पंकज मिश्रा डॉ अनुराग तिवारी डॉ संध्या वर्मा डॉ रामधारी जायसवाल प्रो.प्रवीण कुमार प्रो.बाबा हरिनन्द अनिल केवट सहित महाविद्यालय के छात्र/छात्राए उपस्थित थे।

## ट्रेलर और स्कूल बस में टक्कर, 4 बच्चे घायल

### हादसे के बाद अनूपपुर-जैतपुर मेन रोड पर वाहनों की कतारें लगीं

**मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)।** अनूपपुर में जैतपुर मुख्य मार्ग पर पोड़ी गांव के छुहाईटोला में डीवीएम स्कूल की बस को एक ट्रेलर ने पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में बस में सवार 4 बच्चे घायल हो गए।

घटना की सूचना मिलते ही एडिशनल एसपी इसरार मंसूरी और तहसीलदार अनुपम पांडेय पुलिस दल के साथ मौके पर पहुंचे। घायल बच्चों को 108 एंबुलेंस से अनूपपुर जिला अस्पताल भेजा गया। डॉक्टरों ने सभी बच्चों को खतरे से बाहर बताया है।

स्कूल बस की नंबर एमपी 65 जेडबी 1983 है, जबकि ट्रेलर का नंबर सीजी 04 पीसी 7764 है। हादसे के बाद ग्रामीणों ने आक्रोश जताया। घटना के कारण मुख्य मार्ग पर दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतार लग गई। यातायात निरीक्षक ज्योति दुबे ने मौके पर पहुंचकर यातायात व्यवस्था को सुचारु किया। घटना शुक्रवार दोपहर करीब 4 बजे की है।

## बोर्ड परीक्षाओं के सुचारू संचालन हेतु प्रतिबंधात्मक आदेश जारी

### परीक्षा केन्द्रों के 100 मीटर की परिधि को प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित किया गया

**मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)।** माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश द्वारा वर्ष 2025 की मुख्य परीक्षाओं का संशोधित परीक्षा कार्यक्रम जारी किया गया है, जिसके अनुसार हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी परीक्षा 25 फरवरी से 25 मार्च तक होना सुनिश्चित है। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा सीधी जिले में उक्त परीक्षाओं के संचालन में कानून व्यवस्थाएं, परीक्षा की पवित्रता और विश्वसनीयता बनायें रखने हेतु भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163(1) के तहत प्रतिबन्धात्मक आदेश प्रसारित किया गया है। जारी आदेशानुसार सीधी जिला के समस्त परीक्षा केन्द्रों के 100 मीटर की परिधि को प्रतिबंधित क्षेत्र घोषित कर निर्देशित किया गया है कि कोई भी व्यक्ति या समूह (परीक्षार्थियों, ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों एवं अधिकारियों को छोड़कर) प्रतिबंधित परिधि के अन्दर प्रवेश नहीं करेगा, न ही उक्त परिधि में एकत्रित होगा और न ही किसी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र एवं अन्य घातक पदार्थों को न तो साथ लेकर प्रवेश करेगा और न ही उनका प्रयोग या प्रदर्शन करेगा, कोई व्यक्ति या समूह परीक्षा केन्द्र की ओर किसी भी दिशा से आने वाले आवागमन के मार्ग को किसी भी प्रकार अवरूद्ध नहीं करेगा।

## श्रीमद् भागवत कथा का विशाल आयोजन 8 से

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** पुरनमानाथ धाम अमवा में आगामी 8 अप्रैल से 15 अप्रैल 2025 तक श्री ब्रज वसुंधरा की पावन भूमि श्री वृदांवन में भागवत यात्रा परिवार आश्रम निर्माण के सहायतार्थ श्रीमद् भागवत महापुराण कथा का विशाल आयोजन किया जा रहा है इस संबंध में बताया गया है कि भागवत यात्रा परिवार एवं समस्त जनमानस द्वारा श्री धाम वृंदावन से सुप्रसिद्ध भागवताचार्य श्री आशीषाचार्य जी महाराज वृदांवनोपासक के श्री मुखारविंद से धारा प्रवाहित श्रीमद् भागवत महापुराण कथा आयोजन का आनंद लीजिए एवं भव्य कलश यात्रा निकाली जाएगी एवं श्रीमद् भागवत कथा का आप सभी भक्तवृंद विंध्य की पावन धरा से आयोजित श्रीमद्भागवत कथा का सीधा प्रसारण महाराज श्री के यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब कर देख सकते हैं एवं कार्यक्रम के संबंध में बताया गया है एक साथ पांच हजार लोग बैठ सकेंगे एवं 15 अप्रैल को कथा का समापन एवं लघु महायज्ञ पूर्णाहुति हवन यज्ञ एवं कथा स्थल में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया है।

## प्रधानमंत्री कालेज आफएक्सीलेंस में मनाया गया अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

**मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)।** भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के त्रैमासिक कलेंडर के अनुसार मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के आदेशानुसार 21 फरवरी को प्रधानमंत्री कालेज आफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति शासकीय महाविद्यालय सीधी में भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के नोडल अधिकारी डॉ राम नारायण स्वर्णकार प्राध्यापक वाणिज्य के नेतृत्व में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

सर्वप्रथम निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 15 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। निबंध प्रतियोगिता का विषय था- तकनीकी युग में मातृभाषा का अस्तित्व एवं चुनौतियां। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कु प्रीति रजक बी एससी प्रथम वर्ष, द्वितीय स्थान रामजीत साकेत बी काम द्वितीय वर्ष तथा तृतीय स्थान जयती यादव बी एससी प्रथम वर्ष ने प्राप्त किया। अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अन्तर्गत भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता का विषय था - शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा की भूमिका। भाषण प्रतियोगिता में 8 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रोहित पाण्डे बी ए द्वितीय वर्ष, द्वितीय स्थान प्रांजल कुमार अग्निहोत्री बी ए द्वितीय वर्ष तथा तृतीय स्थान तन्नू शुक्ला बी एससी प्रथम वर्ष ने प्राप्त किया।

निर्णायक की भूमिका में निबंध प्रतियोगिता में डॉ दिवाकर सिंह सहायक प्राध्यापक वनस्पति, डॉ यज्ञ प्रताप साहू अतिथि विद्वान गणित तथा डॉ रामानुज पटेल अतिथि विद्वान हिन्दी रहे। भाषण प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका में डॉ राकेश कुमार प्रजापति सहायक प्राध्यापक भूगोल, डॉ विनोद साकेत विभागाध्यक्ष हिन्दी तथा डॉ रामानुज पटेल अतिथि विव्दान हिन्दी रहे।

भारतीय भाषाएं एवं भारतीय ज्ञान परंपरा विषय में संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। डॉ विनोद साकेत विभागाध्यक्ष हिन्दी ने भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परंपरा पर विस्तृत प्रकाश डाला। डॉ राम नारायण स्वर्णकार प्राध्यापक वाणिज्य ने मातृभाषा, भारतीय भाषाएं और भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को रेखांकित किया। डॉ दिवाकर सिंह, डॉ यज्ञ प्रताप साहू, डॉ राकेश कुमार प्रजापति ने संगोष्ठी में अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। मातृभाषा और राष्ट्रीय परिदृश्य विषय पर प्रश्नमंच आयोजित हुआ। तीन टीमो ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रत्येक टीम में 5-5 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। टीम बी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस टीम में रोहित पाण्डे, प्रांजल अग्निहोत्री, तन्नू शुक्ला, प्रीति रजक तथा कंचन जायसवाल थे। आज के प्रभारी प्राचार्य डॉ प्रभाकर सिंह ने सभी को बधाई प्रेषित किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस कार्यक्रम के संयोजक डॉ विनोद साकेत, सहायक नोडल अधिकारी डॉ राकेश कुमार प्रजापति, डॉ यज्ञ प्रताप साहू, डॉ रामानुज पटेल लिपिक मनोज कुमार प्रजापति ने डॉ राम नारायण स्वर्णकार प्राध्यापक वाणिज्य एवं नोडल अधिकारी भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के मार्गदर्शन में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

# विचार

## नगर निगम में भ्रष्टाचार और बिल्डरों की मनमानी पर सुप्रीम कोर्ट की तल्ख टिप्पणी

इस देश के किसी भी शहर के किसी भी नगर निगम या विकास प्राधिकरण के कार्यालय चले जाइए, बाहर घूमते दलालों की फौज यह बताते हुए नजर आती है कि वहां किस पैमाने पर भ्रष्टाचार फैला हुआ है। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तो यह है कि भ्रष्टाचार को खत्म करने के तमाम दावों के बावजूद आम लोगों का रिश्वत दिए बिना कोई काम हो पाना, आज भी उतना ही मुश्किल है जितना कई वर्षों या दशकों पहले हुआ करता था। हालत यह है कि कोई भी व्यक्ति अपना निजी रिहायशी मकान बनवाने के लिए जैसे ही घर के सामने रेत,रोड़ी,बदरपुर और ईंट मंगवाते हैं वैसे ही पुलिस और नगर निगम अथवा विकास प्राधिकरण का कोई न कोई बंदा रिश्वत की मांग को लेकर पहुंच जाता है। लेकिन इन्ही के इलाके में बड़े पैमाने पर अवैध निर्माण होते रहते हैं, बिल्डरों की मनमानी चलती रहती है और ये चुप्पी साध कर बैठे रहते हैं। दिल्ली से सटे गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर जैसे जिलों में तो हालात कहीं ज्यादा भयावह और बेकाबू हो चुके हैं। शहरीकरण की अंधी दौड़ में भ्रष्टाचार और बिल्डरों की मनमानी के कारण आम लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। देश की राजधानी दिल्ली की हालत भी इस मामले में बेहतर नहीं है। दिल्ली नगर निगम के कामकाज के बारे में तो सब जानते हैं। अब सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई करते हुए दिल्ली नगर निगम पर जिस तरह की तल्ख टिप्पणी कर दी है, उससे एक बार फिर से एमसीडी की कड़वी सच्चाई बाहर आ गई है। सुप्रीम कोर्ट ने चांदनी चौक में अवैध निर्माण को लेकर दिल्ली नगर निगम की निष्क्रियता पर गंभीर टिप्पणी करते हुए यहां तक कह दिया कि क्या दिल्ली नगर निगम बिल्डरों के हाथ में चल रहा है ? सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस सूर्यकांत की अगुवाई वाली बेंच के सामने सोमवार को एक मामले में दिल्ली नगर निगम ने तर्क दिया कि हाई कोर्ट के आदेश के बाद अवैध निर्माण को हटा दिया गया था और इसकी रिपोर्ट भी उपलब्ध है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली नगर निगम के रवैये पर तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा कि, कोई पीआईएल दायर करता है, तब जाकर आप जागते हैं और दिखावे की कार्रवाई करने लगते हैं। हाई कोर्ट भी आपकी बातों को मानकर मामले को बंद कर देता है। क्या नगर निगम बिल्डरों के हाथ में चल रहा है ? सर्वोच्च न्यायालय ने सीबीआई से जांच करवाने की बात कहते हुए दिल्ली नगर निगम को कारण बताओ नोटिस भी जारी कर दिया है,जिसमें यह पूछा गया कि मामले की गहन जांच क्यों न कराई जाए। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस मामले में केवल मौके का मुआयना ही काफी नहीं है, बल्कि दिल्ली नगर निगम की कार्यप्रणाली की भी जांच होनी चाहिए, ताकि यह पता चल सके कि अवैध निर्माण की अनुमति किन कारणों से दी गई। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं को आर्किटेक्ट एवं इंजीनियर जैसे स्वतंत्र विशेषज्ञों के नाम सुझाने को भी कहा है, जो साइट का निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट दे सके।

# दिल्ली की नई मुयमंत्री: चुनौतियों का सफर

**डॉ राकेश कुमार आर्य**

**प्रधानमंत्री मोदी अपनी अलग कार्य शैली के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने रेखा गुप्ता को दिल्ली के मुयमंत्री की कुर्सी पर बैठाने के अपने निर्णय को भी अंतिम क्षणों तक गोपनीय रखा। मीडिया के लोग कई लोगों के नामों को लेकर अनुमान लगाते रहे, परंतु हर बार की भांति इस बार भी प्रधानमंत्री ने अपने निर्णय की गोपनीयता को अंतिम क्षणों तक रहस्यमय बनाए रखा और हमने देखा कि दिल्ली की शालीमार गार्डन सीट से पहली बार विधायक बनकर आईं रेखा गुप्ता को उन्होंने दिल्ली का मुयमंत्री बनवा दिया। निश्चित रूप से रेखा गुप्ता के इस चयन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, परंतु स्पष्ट रूप से पार्टी और देश का नेतृत्व प्रधानमंत्री मोदी कर रहे हैं, इसलिए यही कहा जाएगा कि उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ एक अच्छा समन्वय स्थापित करते हुए रेखा गुप्ता को यह दायित्व दिया। प्रधानमंत्री मोदी राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा सहित कई प्रदेशों में ऐसे चेहरों को आगे ला चुके हैं, उनका वह परीक्षण सफल ही रहा है।**

इसके पीछे चाहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हो या प्रधानमंत्री मोदी या उनके अन्य वरिष्ठ परामर्शदाता हों, सभी का उद्देश्य एक ही रहता है कि नया %बेदाग चेहरा% लोगों को रास आएगा और वह मिले हुए अवसर के दृष्टिगत अच्छे से अच्छा प्रदर्शन करने का प्रयास करेगा। जब %दागदार चेहरों% को बड़ी जिम्मेदारियां दी जाती हैं तो वे उन्हें पूर्ण निष्ठा के साथ निभा नहीं पाते हैं या फिर अपनी परंपरागत कार्य शैली का परिचय देते हुए भ्रष्टाचार जैसे कार्यों में लग जाते हैं। जिसकी क्षति पार्टी को उठानी पड़ती है और अंत में राष्ट्र को भी ऐसे चेहरों से हानि ही मिलती है। इस प्रकार के नए बेदाग चेहरों को आगे लाने से पार्टी और देश दोनों को दूर तक और देर तक लाभ मिलना स्वाभाविक है। बस अपनी इसी दूरगामी सोच के चलते भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का वर्तमान नेतृत्व ऐसे चेहरों को सामने लाता रहता है।

पार्टी ने रेखा गुप्ता को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाकर नारी सशक्तिकरण के प्रति अपनी निष्ठा को व्यक्त किया है। वैसे भी इस समय देश में केवल एक ही महिला मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल का नेतृत्व कर रही हैं। जब बार-बार नारी सशक्तिकरण की बात की जा रही हो, तब भाजपा ने एक महिला को मुख्यमंत्री बनाकर इस चर्चा को मानो एक नई ऊंचाई दी है। दूसरी बात यह है कि दिल्ली में जिस प्रकार केजरीवाल ने पिछले 11 वर्ष में %रेवड़ी बांटने% की परंपरा के आधार पर शासन किया है, उसके चलते बहुत से विकास कार्य प्रभावित हुए हैं। दिल्ली के अनेक क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें पानी की पाइपलाइन कई स्थानों पर गल गई है। जिससे लोगों को मलमूत्र मिले पानी को पीने के लिए अभिशप्त होना पड़ गया है। कई क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें लोगों को दूध मिलना संभव है, परंतु सही पानी मिलना उनके लिए कठिन हो गया है। बिजली के खंभों या लाइन की व्यवस्था भी कई क्षेत्रों में बहुत खराब हो चुकी है। स्वास्थ्य सेवाओं और यातायात को लेकर भी यही कहा जा सकता है। ऐसे में पानी और बिजली की नई लाइन बिछाना और लोगों के स्वास्थ्य व सुविधा के दृष्टिगत उन्हें स्वच्छ पानी और बिजली उपलब्ध कराना दिल्ली की मुख्यमंत्री के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए

यदि वह ऐसा करती हैं तो नौटंकी बाज केजरीवाल को लोग भूल जाएंगे। कोई भी घिसापिटा चेहरा इस काम को करने में लापरवाही बरत सकता था। इसलिए भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने एक नए ऊर्जावान चेहरे को दिल्ली की बागडोर सौंपी है तो इसके पीछे उद्देश्य यह है कि काम ऐसा किया जाए, जिससे लोग केजरीवाल को भूल जाएं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि केजरीवाल अपनी नौटंकियों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने चाहे कितने ही शालीन भाव से दिल्ली के मतदाताओं के जनादेश को स्वीकार किया हो, परंतु इसके पीछे भी उनकी विनम्र नौटंकी ही है। उनसे पूरी उम्मीद की जा सकती है कि वह भारतीय जनता पार्टी की सरकार को चलाने में हर प्रकार का रोड़ा अटकाने का प्रयास करेंगे। लोगों को भ्रमित करेंगे और अपनी नौटंकीवादी राजनीति को सड़कों व चौराहों पर दिखाने का हर संभव प्रयास करेंगे। ऐसे में एक गंभीर नेतृत्व को आगे लाना भारतीय जनता पार्टी के लिए अनिवार्य था। रेखा गुप्ता के भीतर ऐसे ही एक गंभीर व्यक्तित्व को देखा गया है, जो प्रत्येक प्रकार की नौटंकी का सामना करते हुए धैर्य के साथ दिल्ली की जनता की सेवा कर सके।

स्पष्ट है कि भाजपा ने सत्ता का स्वाद लेने के लिए रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री का दायित्व नहीं दिया है, बल्कि पार्टी को निरंतर सत्ता में बनाए रखकर राष्ट्र सेवा करते रहने के लिए उन्हें यह दायित्व दिया गया है। भाजपा की इस प्रकार की रणनीति को केजरीवाल और राहुल गांधी भली प्रकार जानते हैं। भाजपा द्वारा मुख्यमंत्री के चेहरे को ढूंढने में लगे 10-12 दिन के समय को लेकर इन दोनों पार्टियों को इसी बात की चिंता हो रही थी कि भाजपा उन्हें देर तक सत्ता से दूर रखने के लिए मुख्यमंत्री बनाने में जिस प्रकार विलंब कर रही है, वह उनके लिए ही हानिकारक होगा।

इस बार के विधानसभा चुनाव में यमुना की सफाई को भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया गया। हमारा मानना है कि यमुना की सफाई को एक मुद्दा बनाया भी जाना चाहिए था। जिस प्रकार दिल्ली के अनेक गंदे नाले इस नदी को मृत नदी के रूप में परिवर्तित करते जा रहे हैं, वह न केवल दिल्ली के लिए बल्कि पूरे देश के लिए चिंता का विषय है। इसके लिए दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को विशेष परिश्रम करना होगा। हमारा मानना है कि दिल्ली के गंदे नालों के पानी को सीमेंट या लोहे के बड़े-बड़े पाइपों के भीतर डालकर नदी के भीतर इन पाइपों की एक समानांतर लाइन बिछाकर उस पानी को हरियाणा या उत्तर प्रदेश की ओर दूर ले जाया जाए। वहां उसे पीने योग्य या कृषि भूमि को सींचने योग्य बनाकर दोबारा ठीक किया जाए। इसके लिए दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा सरकारों की एक संयुक्त टीम गठित की जाए अथवा एक प्राधिकरण बनाया जाए। इस प्रकार दिल्ली के गंदे नालों का एक बूंद पानी भी यमुना नदी में नहीं गिर पाएगा, जिससे नदी को स्वच्छ रखने में सहायता मिलेगी।

## मातृभाषाएं संवारती हैं संस्कार और संस्कृति को

मातृभाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपराओं, जीवनमूल्यों और इतिहास को संजोने का एक सशक्त साधन है। यह समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र के लिए पहचान का महत्वपूर्ण साधन होती है। शोध बताते हैं कि बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़कर अधिक अच्छी तरह से समझ विकसित करते हैं, वहीं आमजन के लिये संवाद एवं व्यवहार का प्रभावी माध्यम भी यही है। इससे उनकी बौद्धिक क्षमता और रचनात्मकता में वृद्धि होती है। यूनेस्को ने मातृभाषा के महत्व को समझते हुए मातृभाषा के संरक्षण और बहुभाषी शिक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से हर साल 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने की घोषणा 1999 में की और 2000 से इसकी शुरुआत की। इस वर्ष 25वीं वर्षगांठ मनाते हुए इसकी थीम भाषा का महत्व् अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का रजत जयंती समारोह है, जो 2030 तक अधिक समावेशी और टिकाऊ विश्व के निर्माण के लिए भाषाई विविधता पर प्रगति में तेजी लाने की आवश्यकता को रेखांकित करेगा। भाषाई विविधता को बढ़ावा देने, लुप्तप्राय भाषाओं की रक्षा करने और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के प्रयासों को प्रदर्शित करने पर जोर दे रहा है। तकनीकी विकास और इंटरनेट के सुरक्षित विस्तार के साथ, यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि स्थानीय और मातृभाषाओं को डिजिटल माध्यमों में कैसे संरक्षित किया जाए। यह दिवस हमें भाषाओं को डिजिटल रूप में संरक्षित करने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए प्रेरित करता है। यूनेस्को का मानना है कि स्थायी समाज के लिए सांस्कृतिक और भाषाई विविधता बहुत जरूरी है। शांति के लिए अपने जनादेश के तहत यह संस्कृतियों और भाषाओं में अंतर को बनाए रखने के लिए काम करता है जो दूसरों के लिए सहिष्णुता और सम्मान को बढ़ावा देते हैं। बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक समाज अपनी भाषाओं के माध्यम से अस्तित्व में रहते हैं जो पारंपरिक ज्ञान और संस्कृतियों को स्थायी तरीके से प्रसारित और संरक्षित करते हैं। भाषाई विविधता लगातार खतरे में पड़ती जा रही है क्योंकि अधिकाधिक भाषाएं लुप्त होती जा रही हैं। वैश्विक स्तर पर 40 प्रतिशत आबादी को उस भाषा में शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा नहीं है जिसे वे बोलते या समझते हैं। फिर भी, बहुभाषी शिक्षा में प्रगति हो रही है, इसके महत्व की समझ बढ़ रही है, खासकर प्रारंभिक स्कूली शिक्षा में, और सार्वजनिक जीवन में इसके विकास के लिए अधिक प्रतिबद्धता है।

# नेताओं-नौकरशाहों की जिम्मेदारी के बगैर भ्रष्टाचार को मिटाना असंभव

**योगेंद्र योगी**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संसद में कहा था कि भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के लिए एजेंसियों को खुली छूट दे दी है और इसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भ्रष्टाचार एक दीमक है जिसने देश को खोखला कर दिया है और वह देश को इस बुराई से मुक्त करने के लिए पूरे मनोयोग से काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी के इस दृढ़निश्चय के बावजूद भारत में भ्रष्टाचार कैंसर की तरह फैलता जा रहा है। केंद्र की भाजपा सरकार हो या राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें, सभी भ्रष्टाचार के विरुद्ध बड़े दावे-वादे करती रहीं हैं, किन्तु यह समस्या सुरसा के मुंह की तरह विकराल होती जा रही है। करप्शन परसेप्शन इंडेक्स-2024 की भ्रष्टाचार की सूची वाले देशों में भारत 96वें पायदान पर पहुंच गया है। साल 2023 में भारत की रैंक 93 थी।

भारत इस सूची मे पड़ौसी देशों की ज्यादा बुरी हालत पर कुछ राहत महसूस कर सकता है। भ्रष्टाचार की इस सूची में भारत के पड़ोसी देशों में पाकिस्तान 135 नंबर पर और श्रीलंका 121 पर हैं, जबकि बांग्लादेश की रैंकिंग और भी नीचे 149 पर चली गई है। इस लिस्ट में चीन 76वें स्थान पर है। डेनमार्क सबसे कम भ्रष्ट राष्ट्र होने की सूची में सबसे ऊपर है, उसके बाद फिनलैंड और सिंगापुर हैं। 1995 से 2024 तक भारत में भ्रष्टाचार की औसत दर 78.03 रही, जो 2024 में 96.00 के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई और 1995 में 35.00 के रिकॉर्ड निम्नतम स्तर पर पहुंच गई थी।

भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक यानी सीपीआई दुनिया में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली वैश्विक भ्रष्टाचार रैंकिंग है। यह मापता है कि विशेषज्ञों और व्यवसायियों के अनुसार प्रत्येक देश का सार्वजनिक क्षेत्र कितना भ्रष्ट है। प्रत्येक देश का स्कोर 13 विभिन्न भ्रष्टाचार सर्वेक्षणों और आकलनों से प्राप्त कम से कम 3 डेटा स्रोतों लिया जाता है। ये सोर्स विश्व बैंक और विश्व आर्थिक मंच सहित विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों द्वारा एकत्र किए जाते हैं। सीपीआई की गणना करने की प्रक्रिया की नियमित रूप से समीक्षा की जाती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जारी की जाने वाली सूची यथासंभव मजबूत और सुसंगत है या नहीं। भारत में विदेशी निवेश अपेक्षाकृत नहीं आने का एक प्रमुख कारण भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार के कारण भारत की अंतरराष्ट्रीय साख कमजोर है। विदेशी कंपनियां यहां निवेश करने से कतराती हैं। देश के उद्योगपति और लघु व मध्यम व्यवसायी इसकी मार से बच नहीं सके हैं। भारत एक तरफ वैश्विक ताकत बनने की दिशा में अग्रसर है, वहीं दूसरी तरफ भ्रष्टाचार की जंजीर इसके बढ़ते कदम को रोक रही है। ऐसा देश का शायद ही कोई चुनाव होगा जिसमें प्रधानमंत्री मोदी भ्रष्टाचार का जिक्र नहीं किया हो। मोदी ने लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव के दौरान भ्रष्टाचार पर प्रहार करने में कसर बाकी नहीं रखी। संसद में दिए गए भाषण में उन्होंने कहा था कि मेरे लिए भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई चुनावी जीत या हार के पैमाने पर नहीं है। मैं चुनाव जीतने या हारने के लिए भ्रष्टाचार से नहीं लड़ रहा हूं। यह मेरा मिशन है, मेरा विश्वास है। मेरा मानना है कि भ्रष्टाचार एक ऐसा दीमक है जिसने देश को खोखला कर दिया है। मैं इस देश को भ्रष्टाचार से मुक्त करने और आम लोगों के मन में भ्रष्टाचार के खिलाफ नफरत पैदा करने के लिए पूरे दिल से काम कर रहा हूं।

प्रधानमंत्री के देश से पूरी तरह भ्रष्टाचार के खात्मे के प्रति प्रतिज्ञा लेने के बावजूद यदि यह

संक्रामक रोग की तरह बढ़ता ही जा रहा है तो इसके लिए ज्यादातर राजनीतिक दल जिम्मेदार हैं। क्षेत्रीय दलों की हालत यह है कि उनका एकमात्र मकसद किसी भी हालत में सत्ता में बने रहना है। इसके लिए बेशक भ्रष्टाचार से किसी भी हद तक समझौता क्यों न करना पड़े। यही वजह रही है कि इंडिया गठबंधन लगातार चुनावों में शिकस्त खाता रहा है।

आश्चर्य यह है कि लोकसभा चुनावों और राज्यों के विधानसभा चुनावों में करारी हार के बावजूद विपक्षी दलों ने भ्रष्टाचार को कभी भी प्रमुख चुनावी मुद्दा नहीं बनाया। भ्रष्टाचार को लेकर हालात ये हैं कि जैसे ही कोई भी विपक्षी दल भ्रष्टाचार का जिक्र करता है, तत्काल सत्तारुढ़ दल न सिर्फ उसके बचाव में उतर आता है बल्कि विपक्षी दल के कारनामे गिनाने लगता है। यही वजह है कि क्षेत्रीय दल अपने राज्यों में मनमानी करने पर आमदा हैं। यदि केंद्रीय जांच ब्यूरो और प्रवर्तन निदेशालय कोई कार्रवाई करता है तो राज्य के सत्तारुढ़ दल इसे बदले की कार्रवाई करार देने लगते हैं। इसका उदाहरण पश्चिमी बंगाल की ममता बनर्जी सरकार, तमिलनाडु की स्टालिन सरकार और कर्नाटक की सिद्धरमैया की सरकार है। इतना ही नहीं राजनीतिक दलों का भरसक प्रयास होता है कि अदालतों में चल रहे भ्रष्टाचार के मामलों को भी प्रभावित किया जाए।

गौरतलब है कि सीनियर वकील हरीश साल्वे सहित देश के 600 से ज्यादा वकीलों ने सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ को पत्र लिखकर न्यायपालिका पर सवाल उठाने को लेकर चिंता जाहिर की थी। सीजेआई को लिखी चिट्ठी में वकीलों ने कहा था कि ये समूह न्यायिक फैसलों को प्रभावित करने के लिए दबाव की रणनीति अपना रहा है, और ऐसा खासकर सियासी हस्तियों और भ्रष्टाचार के आरोपों से जुड़े मामलों में हो रहा है। चिट्ठी में कहा गया है कि ये समूह ऐसे बयान देते हैं जो सही नहीं होते हैं और ये राजनीतिक लाभ के लिए ऐसा करते हैं। अपनी चिट्ठी में वकीलों ने ऐसे कई तरीकों पर प्रकाश डाला है, जिनमें न्यायपालिका के तथाकथित %स्वर्ण युग% के बारे में झूठी कहानियों का प्रचार भी शामिल है। न्यायपालिका तक को प्रभावित करने के प्रयासों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत में भ्रष्टाचार किस हद तक व्याप्त है। देश की भ्रष्टाचार में रैंकिग बेशक बढ़ रही हो, इसके बावजूद विगत चुनावों में भाजपा अकेली पार्टी रही, जिसने भ्रष्टाचार के खात्मे की बात कही। अन्य दल तो इस मुद्दे पर चर्चा करने तक से कतराते हैं। विपक्षी दलों ने केंद्र के सत्तारुढ दल को भ्रष्टाचार में लपेटने की कई बार नाकाम कोशिश की है, चाहे वह मुद्दा युद्धक विमान राफेल की खरीद का हो या अडानी ग्रुप से जुड़ा हुआ हो। विपक्षी दल सुप्रीम कोर्ट तक में भ्रष्टाचार के मामले को ले गए पर इसे साबित नहीं कर पाए। ऐसा भी नहीं है कि भाजपा भ्रष्टाचार को लेकर दूध की धुली है। भाजपा का दामन थामने वाले विपक्षी दलों के नेताओं के ऐसे मामलों को नजरांदाज किया जाता रहा है। इसके अलावा केंद्र में भाजपा अकेले अपने बलबूते सत्ता में नहीं है, ऐसे में गठबंधन के सहयोगी दलों पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों से मुंह फेरे रहती है। यही वजह रही है कि केंद्रीय जांच ब्यूरो और प्रवर्तन निदेशालय की तरफ से इन सहयोगी दलों के खिलाफ एक भी कार्रवाई नहीं की गई।

# सेंट विसेंट पलोटी स्कूल में सोडियम ब्लास्ट में बच्ची झुलसी

## बाथरूम में टॉयलेट का फ्लश दबाते ही हुआ धमाका, चपेट में आई चौथी की छात्रा

**मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)।** छत्तीसगढ़ में बिलासपुर के सेंट पलोटी स्कूल में सोडियम ब्लास्ट की चपेट में आकर 10 साल की बच्ची बुरी तरह झुलस गई। घटना उस वक्त हुई जब स्कूल में परीक्षा चल रही थी। शुक्रवार सुबह करीब सवा 10 बजे क्लास 4ह्लद्ध की स्टूडेंट बाथरूम पहुंची और टॉयलेट का फ्लश दबाया वैसे ही विस्फोट हुआ। धमाका इतना जबरदस्त था कि स्टूडेंट बुरी तरह झुलस गई। बताया जा रहा है कि इस हरकत में आठवीं क्लास के बच्चों का हाथ है। झुलसी बच्ची को निजी हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। घटना के बाद बच्ची के परिजनों में गुस्सा है। अभिभावकों ने इस हरकत को अंजाम देने वाले को सजा देने की मांग की है।

**स्कूल में चल रही थी परीक्षा:** दरअसल, स्कूल में परीक्षा चल रही है। गुरुवार को बच्चे परीक्षा देने स्कूल आए थे। वहीं क्लास 4 की छात्रा स्तुति भी एग्जाम दे रही थी। इसी दौरान करीब सवा 10 बजे टॉयलेट गई। टायलेट में बच्ची ने फ्लश दबाया तो जोरदार धमाका हुआ।

धमाके की आवाज सुनकर पूरे स्कूल में अफरा-तफरी मच गई। थोड़ी देर बाद जैसे पता चला कि धमाके की आवाज टॉयलेट से आई है तो टीचर्स टॉयलेट की ओर दौड़ पड़े।

**बच्ची की चीखने की आवाज सुनकर घबरा गई टीचर्स:** वहां टॉयलेट के अंदर से बच्ची के चीखने की आवाज आ रही थी। बच्ची मदद के लिए आवाज लगा रही थी। बच्ची की चीखने की आवाज सुनकर टॉयलेट के बाहर पहुंची टीचर्स घबरा गई। उसे टॉयलेट से बाहर निकालने के लिए दरवाजा खोलने की कोशिश की, लेकिन डोर अंदर से लॉक था। इस पर बाहर टीचर्स ने टॉयलेट के दरवाजे को तोड़ की कोशिश की।

जोर से धक्का देकर टॉयलेट के दरवाजे को तोड़ दिया गया। टीचरों ने अंदर जाकर देखा तो छात्रा फर्श पर बुरी तरह झुलसी हुई पड़ी थी। छात्रा को फौरन निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

इधर, स्कूल प्रबंधन ने इस घटना की जानकारी सिविल लाइन थाने की पुलिस को दी है। मौके पर पहुंची पुलिस को मौके से एक सिल्वर पैकिंग का चिथड़ा मिला है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

**सोडियम को एल्युमिनियम फॉयल में लपेटकर टॉयलेट पर रखा:** बताया जा रहा है कि किसी ने लैब से सोडियम को एल्युमिनियम फॉयल में लपेटकर टॉयलेट पर रख दिया था। जैसे ही बच्ची ने टायलेट का फ्लश दबाया तो पानी के संपर्क में आते ही सोडियम रिएक्ट किया और जोरदार धमाका हुआ, जिसमें बच्ची बुरी तरह झुलस गई। हादसे में छात्रा का पैर, पीठ और बाल झुलस गया है।

**आठवीं के बच्चों ने दिया हरकत को अंजाम:** स्कूल के प्रिंसिपल सुनित कुमार ने बताया कि आजकल के बच्चे क्यूरियस होते हैं। आठवीं क्लास के बच्चे सोडियम लेकर स्कूल आए थे। बच्चों ने क्यूरोसिटी के तहत टॉयलेट में इस तरह की हरकत की। रिसेस के दौरान जब चौथी क्लास की बच्ची टॉयलेट गई, तभी धमाके की आवाज आई। ब्लास्ट में बच्ची झुलस गई। जिसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया है। पूछताछ में आठवीं क्लास के बच्चों ने बताया कि क्यूरोसिटी के तहत इस हरकत को अंजाम दिया है।

**हरकत को अंजाम देने वाले को सजा देने की मांग:** वहीं अभिभावकों में इस घटना को लेकर भारी आक्रोश है। पैरेंटस चेतन गुप्ता ने कहा, हादसे में झुलसी बच्ची के माता-पिता अगर स्कूल के खिलाफ शिकायत करते हैं तो स्ट्राइक करेंगे। स्कूल पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए सीसीटीवी की जांच की जाए। साथ ही, इस हरकत को अंजाम देने वाले को सजा दी जाए।

# नव निर्वाचित महापौर तैयारियों का लगातार कर रहे मॉनिटरिंग

## नगर निगम चिरमिरी में स्वच्छता सर्वेक्षण को लेकर तैयारियाँ शुरू



**मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)।** जिले के चिरमिरी नगर पालिक निगम के नवनिर्वाचित महापौर राम नरेश राय ने स्वच्छता सर्वेक्षण 2025 के तहत चिरमिरी शहर को स्वच्छ व सुंदर बनाने की दिशा में नगर निगम के आयुक्त राम प्रसाद आचला, सहायक अभियंता विजय बधावन, स्वच्छता अधिकारी उमेश तिवारी, ज़िला समन्वय (पीआईयू), प्रवीण सिंह व संबंधित अधिकारियों के साथ स्वच्छता सर्वेक्षण को लेकर फ़ीडबैक लिया। महापौर राय ने चिरमिरी के विभिन्न क्षेत्रों का घूमघूम कर दौरा किया व साफ़-सफ़ाई व्यवस्थाओं का जायज़ा लिया। नगर निगम के आयुक्त राम प्रसाद आचला को भी महापौर ने सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने निर्देशित किया। महापौर ने आमजनों से भी अपील करते हुए कहा कि गिला व सूखा कचरा अलग-अलग रखने और कचरा को वाहन में डालने के लिए आग्रह किया। महापौर ने बताया कि लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के लिए नगर निगम जो भी काम रहा है, उन्हें जन-जन तक पहुँचाया जाना चाहिए। उन्होंने स्वच्छता सर्वेक्षण को लेकर लोगों को जागरूक भी किया। इस दौरान महापौर ने नगर निगम के फायर स्टेशन का निरीक्षण कर उपस्थित अधिकारी कर्मचारियों से बात की व निगम के कार्य में तेजी लाने अधिकारियों को निर्देशित किया।

# युवक की गला रेतकर कुएं में फेंकी लाश

## सरगुजा में तड़के 4 बजे घर के सामने हत्या, शव को घसीटते हुए ले गए



**मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (एजेंसी)।** अंबिकापुर के ग्राम परसा में सुबह करीब 4 बजे युवक की चाकू से गला रेतकर हत्या कर दी गई। शव को घसीटते हुए पास ही कुएं में फेंका गया है। घटना की सूचना पर कोतवाली थाना प्रभारी की टीम मौके पर पहुंची। परिजनों ने शव को कुएं से निकलवाया और मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल पहुंचाया। मामले में कोतवाली पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का अपराध दर्ज किया है।

जानकारी के मुताबिक, ग्राम परसा निवासी युवक मुन्ना राम चेरवा (40) बीती रात घर में सोया था। शुक्रवार सुबह करीब 4 बजे वह आहट सुनकर बाहर निकला। घरवालों ने बाहर विवाद होने की आवाज सुनी। जब काफी देर तक मुन्ना राम वापस नहीं लौटा तो परिजन बाहर निकले।

**परिजनों ने निकाला शव, हत्या का जुर्म दर्ज:** परिजनों को घर के बाहर खून फैला हुआ मिला तो वे दहशत में आ गए। आसपास तलाश करने पर मुन्ना राम कुएं में पड़ा हुआ दिखा। परिजनों ने उसे बाहर निकाला, तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल पहुंचने पर चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। युवक का सब्जी काटने वाले चाकू से गला काटा गया है। चाकू पास पड़ा मिला।

कोतवाली थाना प्रभारी मनीष सिंह परिहार ने बताया कि पुलिस मामले में गहनता से जांच कर रही है। युवक का विवाद किनसे था, इसकी भी जानकारी ली जा रही है।

**हत्या के बाद घसीटा शव:** घटनास्थल पर शव को घसीटने के निशान मिले हैं। आरोपियों की संख्या एक से ज्यादा भी हो सकती है। मृतक के शव को पोस्टमॉर्टम शुक्रवार को कराया जाएगा। मामले में पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का अपराध दर्ज कर रही है।

**गांव में चल रहा था जमीन विवाद:** पुलिस पूछताछ में परिजनों ने बताया कि मृतक मुन्नाराम अंबिकापुर में किसी दुकान में काम करता था। उसका जमीन को लेकर विवाद गांव में ही कुछ लोगों से चल रहा था। पुलिस जमीन विवाद के साथ ही अन्य विवाद को लेकर पूछताछ कर रही है।

मौके पर फॉरेंसिक एक्सपर्ट की टीम भी पहुंची है। घटनास्थल पर सब्जी काटने वाला नया चाकू मिला है और खून काफी मात्रा में फैला हुआ है। घर के बाहर से लेकर कुएं तक घसीटने और खून के निशान भी मिले हैं। पुलिस ने डॉग स्क्वायड की टीम को भी मौके पर बुलाया है।

# महिला पुलिसकर्मी को भीड़ ने लात-घूंसों से पीटा

## मतपेटी लूटने की कोशिश सरपंच प्रत्याशी की हार के बाद समर्थकों ने की मारपीट

**मीडिया ऑडीटर, कांकेर (एजेंसी)।** छत्तीसगढ़ में कांकेर के पुसवाड़ा पंचायत में मतदान के दिन महिला पुलिसकर्मी को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा गया। भीड़ से बचने के लिए दौड़ लगा रही महिला पुलिसकर्मी खेत में गिर गई, जिस पर लोग लात-घूंसे चलाते रहे। पहले चरण के मतदान यानी 17 फरवरी की इस घटना का वीडियो अब वायरल हो रहा है। भीड़ ने मतपेटी लूटने की भी कोशिश की। सरपंच प्रत्याशी रुखमणी कोसम के हारते ही समर्थक भड़क गए और रि-काउंटिंग की मांग करने लगे। मतदान दल ने इसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी। एएसपी दिनेश सिंह अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे थे। जिसके बाद भीड़ और ज्यादा उग्र हो गई। तब भीड़ को कंट्रोल करने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज किया।

**हार से संतुष्ट नहीं थी प्रत्याशी, मचा बवाल:** पुसवाड़ा में पंचायत चुनाव का परिणाम आने के बाद प्रत्याशी रुखमणी कोसम हार से सन्तुष्ट नहीं थी और उनके समर्थक देखते ही देखते आक्रोश में आकर गाली-गलौज और मारपीट पर उतारू हो गए। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर समझाया। जब वे नहीं माने तो लाठीचार्ज कर दिया। मामले को शांत करने का प्रयास कर रही पुलिस के लाठीचार्ज से ग्रामीण और भड़क गए, जिससे ग्रामीणों ने पथराव कर दिया।

**मतपेटी छीनने की कोशिश बना मुख्य कारण:** पीठासीन अधिकारी अशोक गोटे ने कोतवाली थाने में शिकायत करते हुए बताया कि हारे हुए प्रत्याशी के कार्यकर्ताओं ने पहले ही उग्र होकर मतपेटी छीनने का प्रयास किया। पुलिस के सहयोग से वापस निकलने के दौरान भी गाड़ियों का घेराव कर मतपेटी छीनने की कोशिश की गई। इसमें सफलता नहीं मिलने पर भीड़ ने पथराव कर दिया, जिससे कई शासकीय वाहनों को नुकसान पहुंचा है।

**7 से 8 पुलिसकर्मी हुए थे घायल:** पुलिसकर्मियों के मुताबिक भीड़ ने उन्हें पुसावण्ड तक दौड़ाया। पुसावण्ड के अन्य ग्रामीणों के रोकने के बाद भीड़ शांत हुई। इस हमले में 7 से 8 पुलिसकर्मी घायल हो गए, जिन्हें जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया। कुछ ग्रामीण गुरुवार शाम पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचे। ज्ञापन सौंपकर लाठीचार्ज में ग्रामीणों के घायल होने का आरोप लगाया। उनके मुताबिक लाठीचार्ज से कई लोगों के सिर फूट गए हैं, कुछ के हाथ तो कुछ के पैर टूट गए हैं। लाठीचार्ज के दौरान बुजुर्ग महिला तक को नहीं बक्शा गया। इसी वजह से ग्रामीण उग्र हो गए।

**40 से 50 लोगों के खिलाफ केस दर्ज:** डीएसपी अविनाश ठाकुर ने बताया कि उग्र हुए ग्रामीणों की पहचान कर एफआईआर की गई है। कोतवाली टीम ने कार्रवाई करते हुए अब तक पूर्व सरपंच समेत कई लोगों को गिरफ्तार किया है। कार्रवाई पूरी होते ही चार्जशीट कोर्ट में पेश की जाएगी।

# 12 आरोपियों को हाईकोर्ट ने दी जमानत

## भीम आर्मी का प्रमुख नेता भी रिहा, 187 लोगों की हुई थी गिरफ्तारी




**मीडिया ऑडीटर, बलौदाबाजार (एजेंसी)।** छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार हिंसा मामले में हाईकोर्ट ने आज बड़ा फैसला सुनाया। जस्टिस एन.के. व्यास की सिंगल बेंच ने भीम आर्मी के प्रदेश अध्यक्ष दिनेश चतुर्वेदी और युवा कांग्रेस नेता सूर्यकांत वर्मा सहित 112 आरोपियों को जमानत दे दी।

हाईकोर्ट में आरोपियों के वकीलों ने कहा कि उनके मुवक्किल निर्दोष हैं। उन्हें राजनीतिक कारणों से फंसाया गया है। वकीलों ने यह भी कहा कि कई आरोपियों की गिरफ्तारी बिना ठोस सबूतों के की गई।

**कई आरोपी अब भी सेंट्रल जेल में बंद:** इससे पहले इस मामले में 60 से अधिक आरोपी जमानत पर रिहा हो चुके हैं, लेकिन कई आरोपी अब भी सेंट्रल जेल में बंद हैं। वहीं विधायक देवेंद्र यादव को सुप्रीम कोर्ट से राहत मिल चुकी है। हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद अन्य आरोपियों के परिवारों ने राहत की सांस ली है।

**सीएम हाउस का घेराव कर रिहाई की मांग:** गुरुवार को भीम आर्मी और सतनामी समाज के लोगों ने इस मामले में सीएम हाउस का घेराव कर न्याय की मांग की थी। कांग्रेस नेताओं ने इसे न्याय की जीत बताया है। विपक्ष ने सरकार और पुलिस की कार्रवाई पर सवाल उठाए हैं।

**बलौदाबाजार हिंसा मामला:** 10 जून 2024 को बलौदाबाजार में सतनामी समाज ने जैतखाम तोड़े जाने का विरोध करते हुए कलेक्टर और एसपी ऑफिस जला दिया था। इस मामले में प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए 43 मामलों में 187 लोगों को गिरफ्तार किया था।

हिंसा में प्रशासन और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़पें हुई थीं। इस दौरान आगजनी की घटनाएं भी हुईं। पुलिस ने बड़ी संख्या में लोगों को गिरफ्तार किया था। आरोपियों पर सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने और कानून-व्यवस्था भंग करने के आरोप थे।

# ऑनलाइन जॉब के चक्कर में फोटोग्राफर ने गंवाए 7.20 लाख

## ठगों ने परमानेंट कस्टमर बनाने का झांसा दिया, फिर निवेश का लालच देकर वसूले रुपए



**मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)।** बिलासपुर में एक फोटोग्राफर ऑनलाइन ठगी का शिकार हो गया। ऑनलाइन जॉब के चक्कर में फंसे फोटोग्राफर से ठगों ने 7 लाख 20 हजार रुपए वसूल लिए। मामला सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र का है। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने धोखाधड़ी का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जूना बिलासपुर निवासी राकेश शर्मा पेशे से फोटोग्राफर हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि कुछ दिन पहले उन्होंने मोबाइल पर ऑनलाइन जॉब का विज्ञापन देखा था। इसमें संपर्क करने पर उन्हें एक लिंक भेजकर अलग-अलग कंपनियों के विज्ञापन भेजा गया। इसे देखकर स्क्रीनशॉट भेजने पर उन्हें कमीशन बतौर पैसे देने की बात कही गई। इस पर फोटोग्राफर ने विज्ञापन देखकर स्क्रीनशॉट भेजना शुरू कर दिया।

**जाल में फंसाने ठगों ने अकाउंट में जमा कराए पैसे:** फोटोग्राफर ने पुलिस को बताया कि ठगों ने कमीशन के रूप में एक-दो बार उनके अकाउंट में कुछ पैसे जमा कराए। जिसके बाद उन्हें कंपनी का परमानेंट कस्टमर बनाने के नाम पर पैसों की मांग की। इस पर फोटोग्राफर ने पांच हजार रुपए ट्रांसफर किया। फिर उन्हें बताया गया कि उनके पैसों को शेयर मार्केट में निवेश किया जाएगा। इससे ज्यादा कमाई होगी।

ठगों ने फोटोग्राफर के अकाउंट में ज्यादा कमीशन भेजने का झांसा दिया। जिसके बाद लालच में आकर उन्होंने करीब 15 हजार रुपए निवेश कर दिया। इसके बाद उन्हें बताया गया कि उनके रुपए फंस गए हैं। जिसे निकालने के नाम पर उनसे करीब एक लाख रुपए और निवेश करने कहा गया।

इस तरह से उन्हें अलग-अलग तरीके से जालसाजों ने फोटोग्राफर से करीब 7 लाख 20 हजार रुपए जमा कराए। बाद में ठगी का एहसास होने पर उन्होंने पूरे मामले की शिकायत कोतवाली थाने में की है। उनकी शिकायत पर पुलिस ने जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया है।

**लोन लेकर जमा कराए पैसे:** फोटोग्राफर ने बताया कि पहले उन्होंने अपने पास रखे पैसों को ऑनलाइन जॉब के नाम पर जमा किया। जिसके बाद बैंक अकाउंट में जमा पैसों को इन्वेस्ट करने के नाम पर ट्रांसफर कर दिया। फिर अपने ट्रांसफर किए गए पैसों को वापस लेने के लिए उन्हें लोन के लिए आवेदन करना पड़ा।

उन्होंने लोन लेकर 5 लाख रुपए जमा कराए। इसके बाद उनसे और रुपयों की मांग की गई। रुपए नहीं देने पर उन्हें धमकाने की भी कोशिश की गई।

# त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 2024-25 की जिला पंचायत, जनपद पंचायत और सरपंच पदों की मतगणना सारणीकरण कल

**मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)।** कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार और रिटर्निंग अधिकारी जिला पंचायत अंकिता सोम शर्मा के मार्गदर्शन में मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले में त्रि-स्तरीय पंचायत आम निर्वाचन 2024-25 के तहत मनेंद्रगढ़ की सारणीकरण मतगणना की प्रक्रिया 22 फरवरी 2025, दिन शनिवार को आयोजित की जाएगी। यह कार्यवाही शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लालपुर के अतिरिक्त भवन में कक्ष क्रमांक 01 में प्रातः 09:00 बजे से शुरू होगी। इस निर्वाचन प्रक्रिया में जिला पंचायत, जनपद पंचायत और सरपंच पदों के लिए मतगणना की जाएगी।

**जिला पंचायत सदस्य पद के लिए सारणीकरण:** जिला पंचायत सदस्य पद हेतु मतगणना और सारणीकरण कक्ष क्रमांक 01 में टेबल क्रमांक 01 पर किया जाएगा। इसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्र शामिल किए गए हैं, जिनमें जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक-5 (केल्हारी), क्षेत्र क्रमांक-6 (ताराबहरा), क्षेत्र क्रमांक-7 (बरबसपुर) और क्षेत्र क्रमांक-8 (चैनपुर) शामिल हैं।

**जनपद पंचायत सदस्य पद के लिए सारणीकरण:** जनपद पंचायत सदस्य पद के लिए मतगणना टेबल क्रमांक 02 पर कक्ष क्रमांक 01 में 17 जनपद पंचायत सदस्यों की होगी। इस टेबल पर तिलोखन, केलुआ, डिहुली, पहाड़हंसवाही, कछौड़, घुटरा, पेण्ड्री, कठौतिया, खैरबना, उजियारपुर, नागपुर, सरभोका, साल्ही, लालपुर, चनवारीडांड़, पाराडोल और छिपछिपी ग्राम पंचायतों के मतों का सारणीकरण किया जाएगा।

**सरपंच पद के लिए सारणीकरण:** सरपंच पद के लिए मतगणना टेबल क्रमांक 03 से 12 तक कक्ष क्रमांक 01 में होगी। इस प्रक्रिया में विभिन्न ग्राम पंचायतों के मतों की गणना की जाएगी। प्रत्येक टेबल पर अलग-अलग ग्राम पंचायतों का सारणीकरण होगा, जिनमें टेबल क्रमांक 03 में तिलोखन, घाघरा, पसौरी, चरवाही,डौड़की और बुलाकीटोला शामिल है । वहीं टेबल क्रमांक 04 में केलुवा, केल्हारी, मनवारी, बिछियाटोला, डांड़हंसवाही, डुगला और केवटी शामिल होंगे । इसके बाद टेबल क्रमांक 05 में पहाड़हंसवाही, रोझी, डिहुली, बिरौरीडांड़, ताराबहरा और कछौड़ शामिल है। वहीं टेबल क्रमांक 06 में रोकड़ा, बड़काबहरा, केराबहरा, महाई, बिहारपुर, घुटरा और शिवगढ़ शामिल है । इसके बाद टेबल क्रमांक में 07 सोनहरी, बाला, गरूड़डोल, पेण्ड्री, सलवा, मुसरा और बांही शामिल हैं, वहीं टेबल क्रमांक 08 में शंकरगढ़, कठौतिया,बेलबहरा, सिरौली, कोथारी, खैरबना, सिरियाखोह, पिपरिया और हस्तिनापुर शामिल होंगे । इसके अलावा टेबल क्रमांक 09 में डंगौरा, भल्लौर, साल्ही, लालपुर, डोमनापारा, चैनपुर, परसगढ़ी, बौरीडांड़, चौघड़ा और चनवारीडांड़ शामिल होंगे। वहीं टेबल क्रमांक 10 में सोनवर्षा, उजियारपुर, बरबसपुर, लोहारी, महराजपुर और सेमरा शामिल है । इसके अलावा टेबल क्रमांक 11 में हर्रा, नागपुर, मोरगा, सरभोका, मुक्तियारपारा, चिरईपानी और लाई शामिल होंगे। और टेबल क्रमांक 12 में पाराडोल, तेन्दूडांड़, नारायणपुर, छिपछिपी, भौंता, बंजी और बुन्देली शामिल है ।

**सारणीकरण स्थल और समय इस प्रकार है:** मतगणना और सारणीकरण का कार्य अतिरिक्त भवन, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लालपुर, जिला मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (छ.ग.) में किया जाएगा। यह प्रक्रिया 22 फरवरी 2025, दिन शनिवार को प्रातः 09:00 बजे से प्रारंभ होगी। त्रि-स्तरीय पंचायत आम निर्वाचन के इस महत्वपूर्ण चरण में निष्पक्ष और पारदर्शी सारणीकरण मतगणना सुनिश्चित करने के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। निर्वाचन प्रक्रिया में शामिल अधिकारियों और कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं ताकि सारणीकरण मतगणना सुचारू रूप से संपन्न हो सके।

# द्वितीय चरण त्रिस्तरीय पंचायत मतदान और मतगणना शांतिपूर्ण संपन्न

**मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)।** राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डी. राहुल वेंकट के मार्गदर्शन और रिटर्निंग अधिकारी जिला पंचायत अंकिता सोम शर्मा के कुशल नेतृत्व में मनेंद्रगढ़ में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के तहत 20 फरवरी 2025 को हुए मतदान की मतगणना शांतिपूर्ण और पारदर्शी तरीके से संपन्न हुई। मतगणना स्थलों में यह प्रक्रिया सुव्यवस्थित ढंग से पूरी कराई गई। इस दौरान राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त प्रेक्षकगणों ने मतगणना कार्य की निगरानी की, जबकि जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासनिक अधिकारियों, मतगणना कार्मिकों और सुरक्षा बलों ने सुचारू संचालन में अहम भूमिका निभाई।

मनेंद्रगढ़ विकासखंड में द्वितीय चरण के तहत मतदान प्रक्रिया पूरी तरह शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। कुल 148 मतदान केंद्रों पर 20 फरवरी 2025 को सुबह 7:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक मतदान हुआ। चुनाव प्रक्रिया के बाद सभी मतदान दल सुरक्षित रूप से लौट आए और मतदान सामग्री को नियमानुसार जमा किया गया। इस कार्य के लिए कुल 166 मतदान दलों की व्यवस्था की गई थी, जिसमें 148 नियमित मतदान दलों के अलावा 18 रिजर्व दल शामिल थे। ये सभी दल 19 फरवरी को मतदान केंद्रों के लिए रवाना हुए थे, और 20 फरवरी की सुबह 7:00 बजे से मतदान प्रक्रिया शुरू कराए थे । वहीं दोपहर 3:00 बजे मतदान समाप्त होने के बाद सभी निर्धारित केंद्रों में मतगणना का कार्य प्रारंभ किया गया। मतदान समाप्ति के बाद मतदान दलों की वापसी का क्रमशः शाम 6:45 बजे से शुरू हुआ। सबसे पहले लालपुर के मतदान दल पहुंचे, जहां उनका रिटर्निंग ऑफिसर के द्वारा स्वागत किया गया। मतदान दलों के लिए भोजन और अन्य आवश्यक सुविधाओं की समुचित व्यवस्था की गई थी, ताकि सभी अधिकारी एवं कर्मी सुचारू रूप से अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकें। अंतिम मतदान दल ने प्रातः 6:00 बजे मतदान सामग्री जमा कर दी, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि सभी दस्तावेज और उपकरण सुरक्षित हैं। इस प्रक्रिया में भरतपुर विकासखंड से 100 मतदान दल और मनेंद्रगढ़ विकासखंड से 66 मतदान दल शामिल थे। संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया में प्रशासनिक अधिकारियों, मतदान कर्मियों और सुरक्षा बलों के समन्वित प्रयासों से मतदान एवं मतगणना का कार्य शांतिपूर्ण और निष्पक्ष रूप से संपन्न हुआ।

# एकलव्य संयुक्त आदर्श आवासीय विद्यालय में कक्षा 6वीं की प्रवेश चयन परीक्षा 2 को

**मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)।** छत्तीसगढ़ में वर्ष 2025-26 के लिए एकलव्य संयुक्त आदर्श आवासीय विद्यालयों में कक्षा 6वीं में विद्यार्थियों के प्रवेश हेतु चयन परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। आयुक्त / पदेन सचिव, छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय आदिम जाति कल्याण, आवासीय एवं आश्रम शैक्षणिक संस्थान समिति, अटल नगर नवा रायपुर द्वारा जारी पत्र के अनुसार यह परीक्षा 2 मार्च 2025, दिन रविवार को प्रातः 10:00 से 12:00 बजे तक (2 घंटे) निर्धारित परीक्षा केंद्रों में आयोजित की जाएगी। परीक्षा में शामिल होने वाले परीक्षार्थी अपने परीक्षा केंद्र एवं प्रवेश पत्र की जानकारी आधिकारिक वेबसाइट से प्राप्त कर सकते हैं। परीक्षार्थियों को परीक्षा के दौरान अपना प्रवेश पत्र तथा काले या नीले रंग का बॉल पेन साथ लाना अनिवार्य होगा।

## शिक्षा मंत्री की तमिलनाडु सीएम को चिट्ठी

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** ट्राई लैंग्वेज विवाद पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शुक्रवार को तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन को लेटर लिखा। उन्होंने राज्य में हो रहे नेशनल एजुकेशन पॉलिसी के विरोध की आलोचना की। उन्होंने लिखा, किसी भी भाषा को थोपने का सवाल नहीं है। लेकिन विदेशी भाषाओं पर अत्यधिक निर्भरता खुद की भाषा को सीमित करती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसे ही ठीक करने का प्रयास कर रही है। एनईपी भाषाई स्वतंत्रता को कायम रखती है और यह सुनिश्चित करती है कि स्टूडेंट अपनी पसंद की भाषा सीखना जारी रखें। धर्मेंद्र प्रधान ने अपने लेटर में मई 2022 में चेन्नई में पीएम मोदी के तमिल भाषा शाश्वत है के बायन का जिक्र करते हुए लिखा- मोदी सरकार तमिल संस्कृति और भाषा को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने और लोकप्रिय बनाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। मैं अपील करता हूं कि शिक्षा का राजनीतिकरण न करें। दरअसल, धर्मेंद्र प्रधान ने 15 फरवरी को वाराणसी के एक कार्यक्रम में तमिलनाडु की राज्य सरकार पर राजनीतिक हितों को साधने का आरोप लगाया था। 16 फरवरी- स्टालिन बोले- धमकी नहीं सहेंगे तमिलनाडु सीएम ने कहा था कि तमिल लोग ब्लैकमेलिंग या धमकी सहन नहीं करेंगे। अगर राज्य को समग्र शिक्षा के फंड से वंचित किया गया, तो केंद्र को %तमिल्स यूनीक नेचर% यानी तमिलों के मजबूत विरोध का सामना करना पड़ेगा।

## एकनाथ शिंदे की कार में बम की धमकी, दो गिरफ्तार

**मुंबई (एजेंसी)।** महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार को कहा, मुझे हल्के में मत लीजिए, जिन्होंने मुझे हल्के में लिया है, उनसे मैं पहले ही कह चुका हूं कि मैं सामान्य पार्टी कार्यकर्ता हूं, लेकिन मैं बाला साहेब का कार्यकर्ता हूं और सभी को मेरी इस बात को समझ लेना चाहिए। शिंदे का यह बयान उनको जान से मारने की धमकी पर आया है। 20 फरवरी को मेल के जरिए शिंदे की कार में बम विस्फोट करने की धमकी दी गई। मंत्रालय और जेजे मार्ग पुलिस थाने को भी धमकी भरा मेल भेजा गया था। मुंबई पुलिस ने धमकी के इस मामले में बुलढाणा से दो लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के नाम मंगेश अच्युतराव वायल (35) और अभय गजानन शिंगणे (22) हैं। दोनों बुलढाणा के देउलगांव माही गांव के रहने वाले हैं। 2022 में हल्के में लिया था, मैंने सरकार बदल दी उन्होंने कहा- जब आपने (विपक्ष) 2022 में हल्के में लिया, तो घोड़ा पलट गया और मैंने सरकार बदल दी। हम आम लोगों की इच्छाओं की सरकार लाए। विधानसभा में अपने पहले भाषण में मैंने देवेंद्र फडणवीस से कहा था कि 200 से ज्यादा सीटें मिलेंगी और हमें 232 सीटें मिलीं। इसलिए मुझे हल्के में मत लीजिए, जो लोग इस संकेत को समझना चाहते हैं, वे इसे समझ लें, और मैं अपना काम करता रहूंगा।

## दिल्ली में आतिशी-पूर्व मंत्रियों के पर्सनल स्टाफ हटाए गए

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के एक दिन बाद रेखा गुप्ता ने पूर्व सीएम आतिशी और उनके मंत्रियों के पर्सनल स्टाफ को हटा दिया है। इसके अलावा आतिशी सरकार ने जिन अधिकारियों-कर्मचारियों को दूसरी जगह नियुक्त किया था उन्हें फौरन अपने मूल विभाग में रिपोर्ट करने को कहा गया है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता आज दोपहर सचिवालय पहुंची और मंत्रियों-अफसरों के साथ मीटिंग की।

# प्रधानमंत्री बोले-लीडरशिप पर विवेकानंद का मंत्र लेकर आगे बढ़ना है

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को दिल्ली के भारत मंडपम में (स्कूल ऑफ अल्टीमेट लीडरशिप) कॉन्क्लेव के पहले एडिशन का इनॉगरेशन किया। प्रधानमंत्री ने कहा- किसी भी देश के निर्माण के लिए वहां के व्यक्ति यानी नागरिकों का विकास जरूरी है। पीएम ने कहा- किसी भी ऊंचाई को प्राप्त करना है, तो आरंभ जन से ही शुरू होता है। हर क्षेत्र में बेहतरीन लीडर्स का विकास बहुत जरूरी है। यह समय की मांग है। इसलिए एसओयूएल की स्थापना विकसित भारत की विकास यात्रा में एक बहुत महत्वपूर्ण और बड़ा कदम है। उन्होंने कहा- स्वामी विवेकानंद जी भारत को गुलामी से बाहर निकालकर बदलाव लाना चाहते थे। उनका विश्वास था कि अगर 100 लीडर उनके पास हों, तो वह भारत को आजादी ही नहीं, बल्कि दुनिया का नंबर वन देश बना सकते हैं। इसी मंत्र को लेकर हम सबको आगे बढ़ना है।

एसओयूएल में भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे भी शामिल हुए हैं। उनके आने पर पीएम मोदी ने कहा- भूटान के राजा का आज जन्मदिन होना और हमारे यहां ये अवसर होना। ये अपने आप में सुखद संयोग हैं। भूटान के पीएम को यहां भेजने में बहुत बड़ा रोल है। इसके लिए मैं उनका भी हृदय से धन्यवाद करता हूं।

1. हमें हर मोर्चे पर बेहतर नेतृत्व की जरूरत पीएम ने

कहा- आज हर भारतीय 21वीं सदी के विकसित भारत के लिए दिन-रात काम कर रहा है। ऐसे 140 करोड़ देश में हर सेक्टर में, हर कार्यक्षेत्र में, जीवन के हर आधार में हमें उत्तम से उत्तम नेतृत्व की आवश्यकता है। कुछ आयोजन ऐसे होते हैं, तो हृदय के बहुत करीब होते हैं और आज का ये स्ट्रू प्रोग्राम भी ऐसा ही है।

2. नवाचार बढ़ाने वाले संसाधनों की आवश्यकता उन्होंने कहा- किसी भी देश को प्रगति करने के लिए न केवल प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता होती है, बल्कि मानव संसाधनों की भी आवश्यकता होती है। 21वीं सदी में हमें ऐसे संसाधनों की आवश्यकता है जो नवाचार को बढ़ावा दे सकें और कौशल को प्रभावी ढंग से चैनल कर सकें। हमें वैज्ञानिक रूप से नेतृत्व विकास में तेजी लानी चाहिए।

## नई दिल्ली स्टेशन पर भगदड़ के वीडियो हटाने के निर्देश

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 15 फरवरी को हुई भगदड़ में 18 लोगों की मौत हो गई थी। मामले में अब तक जांच रिपोर्ट नहीं आई है, लेकिन रेलवे ने एक फरमान जरूर जारी किया है। हिंदुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार रेल मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क को नोटिस जारी कर 288 वीडियोज लिंक हटाने का निर्देश दिया है। मंत्रालय ने 17 फरवरी को यह नोटिस भेजा था और एक्स को 36 घंटे में घटना से जुड़े सभी वीडियो लिंक हटाने का निर्देश दिया था। मंत्रालय के नोटिस में कहा गया कि यह नैतिकता के साथ ङ्क के कंटेंट पॉलिसी के भी खिलाफ है। इस तरह के वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर होने से कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब हो सकती है। अभी ट्रेनों में भारी भीड़ है, इसे देखते हुए रेलवे का ऑपरेशन भी प्रभावित हो सकता है। दिसंबर में वीडियो हटवाने का अधिकार मिला दिसंबर में प्रत्यक्ष रूप से वीडियो हटाने का अधिकार मिलने के बाद कंटेंट को लेकर यह मंत्रालय की पहली बड़ी कार्रवाई है। हालांकि इस तरह का यह दूसरा मामला है।

## सिख विरोधी दंगा, सज्जन कुमार की सजा पर फैसला सुरक्षित

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली में 1984 सिख विरोधी दंगा मामले में कोर्ट ने कांग्रेस के पूर्व सांसद सज्जन कुमार के खिलाफ सजा पर फैसला सुरक्षित रख लिया है। पीड़ित पक्ष ने सज्जन कुमार के लिए मौत की सजा की मांग की है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने 12 फरवरी को सज्जन कुमार को दोषी ठहराया था। उन पर 1984 में दंगों के दौरान सरस्वती विहार में जसवंत सिंह और उसके बेटे तरुणदीप सिंह की हत्या का दोषी पाया। वह पहले से ही दिल्ली कैंट मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। इससे पहले दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में जज कावेरी बावेजा ने शुक्रवार को

बचाव पक्ष को 2 दिन में लिखित दलीलें पेश करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि हम 25 फरवरी दोपहर 2 बजे के बाद सज्जन कुमार की सजा पर फैसला लेंगे। वरिष्ठ वकील एचएस फुल्का 1984 के दंगा पीड़ितों के लिए ऑनलाइन पेश हुए और अपनी लिखित दलीलें पेश कीं और मृत्युदंड की मांग की। वहीं बचाव पक्ष की ओर से अनिल कुमार शर्मा भी ऑनलाइन पेश हुए। 1. दिल्ली कैंट की पालम कॉलोनी में 5 सिखों की हत्या के बाद गुरुद्वारा जला दिया गया था। इसी केस में सज्जन कुमार को दोषी पाया गया। दिल्ली हाईकोर्ट ने 17 दिसंबर, 2018 को सज्जन को उम्रकैद की सजा सुनाई थी।

## 1 करोड़ की ड्रग्स के साथ लेडी डॉन अरेस्ट

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली पुलिस ने गैंगस्टर हाशिम बाबा की तीसरी पत्नी जोया खान को 270 ग्राम ड्रग्स साथ गिरफ्तार किया, जिसकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में करीब 1 करोड़ है। जोया को पुलिस ने 20 फरवरी को नॉर्थ ईस्ट दिल्ली के वेलकम इलाके से गिरफ्तार किया। जोया खान का नाम लंबे समय से पुलिस की निगरानी लिस्ट में था लेकिन वह हर बार बच निकलती थी। 33 साल की जोया को अपने पति के गैंग का संभालने और कानून से बचने में माहिर माना जाता था। पुलिस को लंबे वक्त से शक था कि वह अपराधों में शामिल है लेकिन पुख्ता सबूत न मिलने के कारण अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई थी। इस बार दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने उसे

रंगे हाथों पकड़ लिया। हाशिम बाबा पर हत्या उगाही और हथियार तस्करी के दर्जनों मामले दर्ज हैं। जोया उसकी तीसरी पत्नी है, उसने 2017 में जोया से शादी की। हालांकि की जोया की यह दूसरी शादी है, साल 2014 में पहली शादी के बाद उसका तलाक हो गया था।

## भारत-पाकिस्तान के बीच फ्लैग मीटिंग, 4 साल में पहली बार

**श्रीनगर (एजेंसी)।** जम्मू-कश्मीर में एलओसी (नियंत्रण रेखा) पर तनाव के बीच भारत और पाकिस्तान की सेनाओं के बीच शुक्रवार को फ्लैग मीटिंग हुई। यह मीटिंग पुंछ सेक्टर के चाका दा बाग (ट्रेड सेंटर) में आयोजित की गई। जिसमें दोनों सेनाओं के ब्रिगेडियर रैंक के अधिकारी शामिल हुए। बैठक 75 मिनट तक चली। पिछले चार सालों में दोनों देशों के बीच इस तरह की पहली मीटिंग है। आखिरी फ्लैग मीटिंग 2021 में हुई थी। सूत्रों ने कहा कि बैठक में दोनों पक्षों के बीच बॉर्डर पर शांति बनाए रखने और सीजफायर पर सहमति बनी। पिछले कई हफ्तों से स्पष्ट पर तनाव बना हुआ है। सेना ने 4

फरवरी को 7 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मार गिराया था। वहीं 13 फरवरी को भी पाकिस्तान सैनिकों के सीजफायर तोड़ने की खबर आई थी। सेना ने बाद में इसका खंडन किया था।

16 फरवरी 2025- जम्मू-कश्मीर में एलओसी पर स्नाइपर फायरिंग, एक भारतीय जवान घायल जम्मू-कश्मीर में एलओसी पर 16 फरवरी को पुंछ सेक्टर में स्नाइपर फायरिंग हुई जहां एक भारतीय जवान घायल हो गया। इस घटना के बाद भारतीय और पाकिस्तानी सैनिकों के बीच कुछ देर तक गोलीबारी भी हुई।

13 फरवरी 2025- पाकिस्तान की ओर से फायरिंग की खबर, सेना ने खंडन किया 13 फरवरी को पाकिस्तान की ओर से भारतीय सीमा में गोलीबारी की खबर आई थी। सोशल मीडिया पर भी पाकिस्तानी अधिकारियों का एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें वे अपने सैनिकों को श्रद्धांजलि देते हुए दिखाई दिए थे।

## महाकुंभ आने-जाने के दौरान 3 हादसे, 16 की मौत

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** महाकुंभ से जुड़े तीन हादसों में 16 लोगों की मौत हो गई। इनमें से दो हादसे उत्तर प्रदेश, तो एक हादसा बिहार में हुआ। दो एक्सीडेंट में लोग महाकुंभ में स्नान करके लौट रहे थे, जबकि एक परिवार डुबकी लगाने जा रहा था। बिहार के भोजपुर में महाकुंभ से लौट रही कार ट्रक के पीछे घुस गई। इसमें 6 लोगों की मौत हो गई। इनमें से चार लोग एक ही परिवार के थे। वहीं, वाराणसी में प्रयागराज हाईवे पर श्रद्धालुओं की कार खड़े ट्रक से टकरा गई। ये लोग स्नान करने जा रहे थे। इधर, यूपी के ही गाजीपुर में महाकुंभ से लौटते हुए एक कार वाराणसी-गोरखपुर हाईवे पर खड़े ट्रॉले से टकरा गई। इसमें 4 की मौत हो गई। मृतकों में पूर्णिया (बिहार) के निर्दलीय सांसद पप्पू यादव की भांजी भी थीं। बिहार के भोजपुर में महाकुंभ से लौट रहे 6 लोगों की सड़क हादसे में मौत हो गई। मरने वालों में एक परिवार के 4 लोग (दंपती, बेटा और भतीजी) थे। घटना शुक्रवार सुबह पटना से 40 किमी पहले आरा-मोहनिया नेशनल हाईवे पर दुल्हनगंज बाजार स्थित पेट्रोल पंप के पास हुई। यहां कार सड़क किनारे खड़े ट्रक पर पीछे से घुस गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार के परखच्चे उड़ गए।

## राहुल बोले- अडाणी निजी नहीं, बल्कि देश का मामल,अमेरिका में कार्रवाई,

**रायबरेली (एजेंसी)।** रायबरेली में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने उद्योगपति गौतम अडाणी को लेकर पीएम मोदी पर निशाना साधा। कहा- नरेंद्र मोदी अमेरिका की प्रेस को बोल रहे हैं कि अडाणी मेरे मित्र हैं और मैं इसके बारे में अमेरिका के राष्ट्रपति से सवाल नहीं पूछूंगा। अडाणी के खिलाफ अमेरिका में केस दर्ज है। भ्रष्टाचार और चोरी के आरोप हैं। हमारे प्रधानमंत्री वहां जाकर कहते हैं कि ये हमारा निजी मामला है। इस पर हम चर्चा नहीं करेंगे। अडाणी पर अमेरिका में कार्रवाई हुई है। भारत में क्यों नहीं हो रही। प्रधानमंत्री से पूछो कि आप अमेरिका क्यों गए। आपने पत्रकार के सामने क्यों कहा कि आपने यह मामला ट्रंप के सामने नहीं उठाया। ये जरूरी मामला है, आपको उठाना चाहिए था। अमेरिका की

सरकार के लिए यह आदमी चोर है। भ्रष्टाचारी है। हिन्दुस्तान के पीएम से कोई यह सवाल क्यों नहीं पूछ रहा है। इससे पहले राहुल ने भुए मऊ गेस्ट हाउस में कार्यकर्ताओं और प्रतिनिधिमंडलों से मुलाकात की। इस दौरान स्कूली बच्चों से भी मिले। उनसे सवाल-जवाब किया। शुक्रवार सुबह राहुल गांधी भीरा गोविंदपुर पहुंचे। यहां डॉ.भीमराव अंबेडकर और वीरा पासी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके रायबरेली रेल कोच फैक्ट्री का निरीक्षण किया। राहुल 2 दिवसीय दौरे पर गुरुवार और शुक्रवार को रायबरेली में थे। यहां से शाम को दिल्ली के लिए रवाना हो गए। इससे पहले राहुल गांधी 5 नवंबर, 2024 को रायबरेली आए थे। वहीं, लोकसभा चुनाव यानी सांसद चुने जाने के बाद राहुल का रायबरेली का यह चौथा दौरा है। राहुल गांधी ने कहा- मोदी जी से पूछिए, ये जो आप के मित्र हैं अडाणी, इन पर अमेरिका में कार्रवाई हुई है। भारत में क्यों नहीं हो रही। आप अमेरिका क्यों गए।

आप ने पत्रकार के सामने क्यों कहा कि आपने यह मामला ट्रंप के सामने नहीं उठाया। ये जरूरी मामला है, आपको उठाना चाहिए था। अमेरिका की सरकार के लिए यह आदमी चोर है। भ्रष्टाचारी है। हिन्दुस्तान के पीएम से कोई यह सवाल क्यों नहीं पूछ रहा।

## मैट्रिक परीक्षा में नकल नहीं कराने पर छात्र की हत्या

**सासाराम (एजेंसी)।** सासाराम में मैट्रिक परीक्षा में नकल नहीं कराने पर एक छात्र की गोली मारकर हत्या कर दी गई। एक और छात्र को गोली लगी है, उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। 20 फरवरी को मातृभाषा (हिंदी, उर्दू) का पेपर था। अमित कुमार और संजीत कुमार बुढ़न मोड़ स्थित संत अन्ना स्कूल में परीक्षा दे रहे थे। इसी दौरान हॉल में बैठे एक छात्र ने दोनों से नकल कराने को कहा। दोनों ने मना कर दिया। इसके बाद वो छात्र बाहर निकला और अपने साथियों को बुलाकर लाया। अमित और संजीत दोनों ऑटो से परीक्षा देकर घर लौट रहे थे। इसी दौरान एनएच-19 पर देर शाम कुछ बदमाशों ने ऑटो रुकवाया और घेरकर दोनों को गोली मार दी। चीटिंग से मना करने पर उसने धमकी दी कि तुम्हारे ऑटो पर बम गिरवा देंगे। परीक्षा के बाद हम घर लौट रहे थे। वो अपने

साथियों को लेकर आ गया। हम भइया-भइया कर रहे थे।

जैसे ही हम ऑटो से थोड़ा आगे पहुंचे, उन लोगों ने ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। ऑटो वाले को भी मारने की धमकी दे रहे थे। गोली लगने के बाद दोनों को इलाज के लिए सासाराम ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया। इसके बाद प्राइवेट अस्पताल भेज दिया गया। इलाज के दौरान अमित कुमार की मौत हो गई। संजीत कुमार (16) का इलाज चल रहा है। उसकी स्थिति गंभीर बनी हुई है। घटना के बाद मुफस्सिल थाने के सुवारा में ग्रामीणों ने सड़क जाम कर दिया। पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। दोनों छात्र डेहरी मुफस्सिल थाना क्षेत्र के शंभू बीघा गांव के रहने वाले हैं।

# चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत का जीत के साथ आगाज, बांग्लादेश को 6 विकेट से चटाई धूल

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत का जीत का खाता खुल गया है। टीम इंडिया ने अपने पहले मैच में बांग्लादेश को 6 विकेट से हराया। इस जीत के साथ ही भारत को 2 अंक मिले। भारत ने बांग्लादेश के द्वारा दिए गए 229 रन के लक्ष्य को 4 विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया। टीम इंडिया की जीत में तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी, अक्षर पटेल, रोहित शर्मा, शुभमन गिल और केएल राहुल का अहम योगदान है। गिल ने वनडे करियर का आठवां शतक भी जड़ा। वहीं अब भारत का अगला मुकाबला अपने चिर प्रतिद्वंद्वी टीम पाकिस्तान से रविवार, 23 फरवरी को दुबई में ही खेला जाएगा। भारत ने 229 रन के टारगेट को 46.3 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया था।

रोहित शर्मा और शुभमन गिल ने भारत को अर्धशतकीय शुरुआत दिलाई। दोनों ने पहले विकेट के लिए 69 रन की साझेदारी की। इस दौरान रोहित ने 41 रन बनाए और आउट हो गए। साथ ही उन्होंने अपने वनडे करियर में 11000 रन भी पूरे किए। विराट कोहली 22 रन बनाकर पवेलियन लौटे, जबकि श्रेयस अय्यर ने 15 रन का योगदान दिया। अक्षर पटेल पांचवें नंबर पर उतरे और महज 8 रन बनाकर आउट हो गए। गिल ने वनडे करियर का आठवां शतक ठोका।

उन्होंने 129 गेंदों पर नाबाद 101 रन बनाए। इस दौरान गिल ने 9 चौके और दो छक्के जड़े। केएल राहुल 47 गेंदों में 41 रन बनाकर नाबाद लौटे। इस दौरान बांग्लादेश के रिशाद हुसैन ने सबसे ज्यादा 2 विकेट झटके। वहीं बांग्लादेश के लिए तौहीद हृदोय ने 118 गेंद पर 100 रन बनाए। जेकर अली ने 114 गेंद पर 68 रन बनाए। तंजिद हसन ने 25 रन बनाए। रिशाद हुसैन ने 18 रन बनाए। सौम्य सरकार, नजमुल हसन शांतो, मुस्तफिजुर रहीम और तंजिम हसन साकिब बैगर खाता खोले आउट हुए। वहीं मुस्तफिजुर रहमान बिना खाता खोले ही पवेलियन लौटे। जबकि भारत के लिए मोहम्मद शमी ने 5 विकेट झटके। हर्षित राणा ने 3 और अक्षर पटेल ने 2 विकेट लिए।

## जाकिर-हृदोय ने किया कमाल, छठे विकेट के लिए पूरी की सबसे बड़ी साझेदारी

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारत और बांग्लादेश के बीच आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का दूसरा मैच दुबई में खेला जा रहा है। बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाज करते हुए 49.4 ओवर में 228 रन बनाए। हालांकि, बांग्लादेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही। टीम ने पहले ही ओवर में अपने दो विकेट गंवा दिए। साथ ही टीम ने शुरुआती 10 ओवर के अंदर ही पांच विकेट गंवा दिए। हालांकि, जाकेर अली और तोहीद ने बांग्लादेश के लिए छठे विकेट के लिए शतकीय साझेदारी की और टीम को एक बेहतरीन स्थिति में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। जाकिर अली और तौहीद हृदोय ने छठे विकेट के लिए 206 गेंद में 154 रन की पारी खेली। इस दौरान मोहम्मद शमी ने अली को आउट करके इस साझेदारी का अंत किया। अली 114 गेंद में 68 रन बनाकर आउट हुए। उन्होंने अपनी पारी में चार चौके लगाए। इसी के साथ जोड़ी ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। चैंपियंस ट्रॉफी के इतिहास में छठे या उससे नीचे नंबर पर सबसे बड़ी साझेदारी करने का रिकॉर्ड जैकर अली और तौहीद के नाम जुड़ गया है।

वहीं इससे पहले ये रिकॉर्ड मार्क बाउचर और जस्टिन कैप के नाम था।

## तलाक की अफवाहों के बीच युजवेंद्र चहल ने पोस्ट की स्टोरी, धनश्री ने यूं दिया जवाब

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** टीम इंडिया के स्पिनर युजवेंद्र चहल और धनश्री वर्मा की शादीशुदा जिंदगी को लेकर लगातार अफवाहें जारी है। मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि दोनों अलग हो चुके हैं। चहल और धनश्री ने तलाक की अफवाहों पर कोई सफाई नहीं दी है लेकिन सोशल मीडिया पर इशारों-इशारों में एक-दूसरे पर तंज करते जरूर नजर आते हैं।

वहीं गुरुवार को चहल ने सोशल मीडिया पर एक स्टोरी पोस्ट की। जिसमें उन्होंने लिखा कि, मैं जितना गिन सकता हूं भगवान ने मुझे उससे ज्यादा बचाया है। तो मैं सिर्फ वो ही समय याद कर सकता हूं जब मुझे बचाया गया, जिसके बारे में मुझे पता भी नहीं है। मेरे साथ होने के लिए थैंक्यू भगवान, तब भी जब मुझे पता नहीं था।

चहल की स्टोरी के लगभग एक घंटे बाद इंस्टाग्राम पर भगवान से जुड़ा ही पोस्ट शेयर किया। उन्होंने लिखा कि, स्ट्रेस से सौभाग्यशाली होने तक। ये कितना अच्छा है कि भगवान कैसे आपकी चिंताओं को खुशियों में बदल देते हैं? अगर आप किसी चीज को लेकर टेंशन में हैं तो ये जान लीजिए कि आपके पास ऑप्शन है। आप या तो टेंशन ले सकते हैं या फिर आप भगवान को खुद को समर्पित कर सकते हैं और हर चीज के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। इस बात पर विश्वास करने में शक्ति है कि ईश्वर आपकी भलाई के लिए सभी चीजें एक साथ कर सकते हैं।

बता दें कि, चहल और धनश्री एक-दूसरे को सोशल मीडिया से अनफॉलो कर चुके हैं।

## मोहम्मद शमी ने वनडे में पूरा किया विकेटों का दोहरा शतक

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत का पहला मुकाबला मोहम्मद शमी के लिए वापसी वाला रहा। दरअसल, शमी ने जैसे ही बांग्लादेश के खिलाफ 43वें ओवर की चौथी और अपने कोटे के 8वें ओवर की अपनी तीसरी सफलता हासिल कि तो उन्होंने विकेटों का दोहरा शतक वनडे इंटरनेशनल क्रिकेट में पूरा कर लिया।

वे भारत के लिए सबसे कम मैचों में ऐसा करने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं, जबकि दुनिया के दूसरे गेंदबाज वे सबसे कम मैचों में 200 वनडे विकेट झटकने वाले बन गए हैं। गेंदों के हिसाब से शमी ने वर्ल्ड रिकॉर्ड बना दिया है। वे मिचेल स्टार्क से आगे निकल गए हैं। वनडे इंटरनेशनल क्रिकेट में मोहम्मद शमी ने 5126 गेंदों में 200 विकेट पूरे किए हैं, जबकि मिचेल स्टार्क ने 5240 गेंदों में ये उपलब्धि हासिल की थी।

सकलैन मुश्ताक पाकिस्तान के लिए 5451 गेंदों में ये कारनामा कर चुके हैं। वहीं, मैचों के हिसाब से मिचेल स्टार्क ने 102 मैचों में 200 वनडे विकेट हासिल किए थे, जबकि शमी ने इस मामले में सकलैन मुश्ताक की बराबरी की है। दोनों ने 104-104 मैचों में 200 विकेट वनडे क्रिकेट में चटकाए थे।

## वनडे क्रिकेट में 11 हजारी बने रोहित शर्मा, सचिन-गांगुली और विराट के क्लाब में हुए शामिल

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** बांग्लादेश के खिलाफ खेले जा रहे चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दूसरे मुकाबले में भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। अपनी पारी में 14 रन बनाते ही रोहित ने वनडे क्रिकेट में 11 हजार रन पूरे कर लिए हैं। ये कारनामा करने वाले वह चौथे भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। इस मामले में रोहित ने सचिन तेंदुलकर को पछाड़ा है जबकि विराट कोहली अब भी पहले स्थान पर हैं।

रोहित ने इस मुकाबले में 36 गेंदों में 41 रन की पारी खेली और इस दौरान उन्होंने 7 चौके भी लगाए। रोहित ने बांग्लादेश के खिलाफ अपनी पारी के दौरान वनडे फॉर्मेट में 11 हजार रन पूरा करने का कमाल किया। उन्होंने 261वें पारी में ये कमाल किया और सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ दिया। सचिन तेंदुलकर ने वनडे में 11,000 रन 276 पारियों में पूरा किया था और अब रोहित शर्मा वनडे में दूसरे सबसे तेज 11 हजार रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए। वर्ल्ड क्रिकेट में वनडे में सबसे कम पारियों में 11 हजार रन बनाने का रिकॉर्ड विराट कोहली के नाम पर दर्ज हैं जिन्होंने 222 पारियों में किया था। साथ ही रोहित शर्मा वनडे फॉर्मेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में 10वें स्थान पर आ गए और राहुल द्रविड़ से आगे निकल गए। वनडे में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज की लिस्ट में सचिन तेंदुलकर अब भी पहले नंबर पर हैं जबकि कुमार संगकार दूसरे जबकि विराट कोहली तीसरे स्थान पर मौजूद हैं। वहीं रोहित शर्मा वर्ल्ड क्रिकेट में 11 हजार रन बनाने वाले दुनिया के 10वें बल्लेबाज भी बन गए।

## इवेंट के बादशाह हैं मोहम्मद शमी

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** आईसीसी वनडे टूर्नामेंट के साथ भारतीय गेंदबाज मोहम्मद शमी बेहतरीन तालमेल है। यही कारण है की मोहम्मद शमी भारत के सबसे सफल गेंदबाज आईसीसी वनडे टूर्नामेंट में बन गए हैं। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के पहले ही मैच में मोहम्मद शमी ने शानदार गेंदबाजी करते हुए पंजा खोला और भारतीय टीम के लिए मैच जीतने के दरवाजे खोल दिए। शमी ने जसप्रीत बुमराह की कमी खलने नहीं दी है जो चोटिल होने के कारण टूर्नामेंट से बाहर हैं।

शमी ने बांग्लादेश के खिलाफ बांग्लादेश पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया और आखिर में कुछ रिकॉर्ड भी अपने नाम कर दिए। मोहम्मद शमी ने इस मुकाबले के दौरान तीसरा विकेट लेते ही 200 विकेट वनडे इंटरनेशनल क्रिकेट में पूरे किए। सबसे कम गेंदों में वे इस उपलब्धि पर पहुंचने वाले पहले गेंदबाज बने। इसके अलावा वे आईसीसी वनडे टूर्नामेंट में भारत के लिए सबसे ज्यादा विकेट चटकाने वाले गेदंबाज भी बन गए हैं। इस मामले में उन्होंने पूर्व तेज गेंदबाज जहीरखान को पछाड़ दिया है। जहीर खान ने 59 विकेट आईसीसी वनडे वर्ल्ड कप और चैंपियंस ट्रॉफी में चटकाए थे। साथ ही शमी के विकेटों की संख्या अब वर्ल्ड कप और चैंपियंस ट्रॉफी में 60 हो चुकी है।

शमी ने 10 ओवर गेंदबाजी की, कुल 53 रन देकर उन्होंने 5 विकेट अपने नाम किए। ये आईसीसी इवेंट में उनका पांचवां फाइव विकेट हॉल था।

## फिर लेग स्पिन के आगे कमजोर पड़े विराट कोहली, पिछली 6 पारियों में 5वीं बार बने शिकार

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में बांग्लादेश के खिलाफ भारत के सलामी बल्लेबाज विराट कोहली का बल्ला नहीं चला। वह 38 गेंदों में 22 रन देकर बनाकर अपना विकेट गंवा बैठे। इस दौरान वह अपनी पारी के दौरान संघर्ष करते हुए दिखे। सबसे बड़ी परेशानी की बात ये है कि वह एक बार फिर लेग स्पिन पर आउट हुए। इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में आदिल रशीद ने उन्हें तंग किया था तो दुबई में बांग्लादेश के लेग स्पिनर रिशाद हुसैन ने उन्हें आउट किया।

2024 से अबतक 6 पारियों में 6 बार विराट कोहली स्पिन पर आउट हुए हैं। इनमें से 4 बार लेग स्पिनर ने आउट किया है। श्रीलंका दौरे पर 3 वनडे मैचों में 2 बार लेग स्पिन पर आउट हुए थे। एक बार बाएं हाथ के स्पिनर ने आउट किया था। इसके 2025 में फरवरी में इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में कोहली 2 मैच खेले। दोनों मैच में आदिल रशीद ने आउट किया। इस तरह कोहली 2024 से 5 बार लेग स्पिनर्स के खिलाफ आउट हुए हैं। इन 5 पारियों में 51 गेंद पर 6.20 के औसत और 60.78 के स्ट्राइक रेट से 31 रन बनाए हैं। बांग्लादेश के खिलाफ मैच में कोहली की विकेट की बात करें तो रिशाद ने ऑफ स्टंप से बाहर लेंथ बॉल की। कोहली बैकफुट पर कट करने गए और गेंद को नीचे नहीं रख पाए। बैकवर्ड पॉइंट पर सौम्य सरकार ने आसान कैच लपका।

## 23 बरस की हुई स्टार शूटर मनु भाकर, अब मां का सपना करेंगी पूरा

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारत की स्टार शूटर मनु भाकर 18 फरवरी को अपना 23वां जन्मदिन मना रही हैं। 18 फरवरी 2002 को हरियाणा के झज्जर जिले के गोरिया गांव में जन्मी मनु ने अपनी पढ़ाई यूनिवर्सल पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल से की। उनके पिच मर्चेंट नेवी में इंजीनियर हैं और उनकी मां एक टीचर हैं। शूटिंग खेल में अपना भविष्य बनाने वाले मनु ने देश के लिए काफी नाम कमाया है। हालांकि, अपनी मां की ख्वाहिश को पूरा करने अभी भी उनके लिए बाकी है।

शायद आपको नहीं पता कि मनु की मां अपनी बेटी को शूटिंग के साथ-साथ एक खास फील्ड में भी देखना चाहती हैं।

मनु भाकर की मां की ख्वाहिश के बारे में आप सोच रहे होंगे कि बेटी शूटिंग में कई मेडल हासिल कर चुकी हैं, फिर मनु की मां की ख्वाहिश क्या होगी? दरअसल, मनु भाकर की मां चाहती हैं कि उनकी बेटी के नाम के आगे डॉक्टर लगे। इस किस्से के बारे में मनु ने पेरिस ओलंपिक के समय अपने सम्मान में डीएसआरए द्वारा आयोजित डिनर के दौरान बताया था। मनु भाकर ने सो के दौरान कहा था कि मेरी मां चाहती हैं कि मेरे नाम के आगे डॉक्टर लगे, और यही वजह है कि मैं पीएचडी करना चाहती हूं। मां का सपना पूरा करने के लिए मनु भाकर पिस्टल के साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी करेंगी।

मनु अपनी पीएडी की पढ़ाई कब शुरू करेंगी इस बात की तो जानकारी नहीं है। बता दें कि, मनु एक ही ओलंपिक में दो मेडल जीतने वाली पहली भारतीय एथलीट हैं। उन्होंने 2024 के पेरिस ओलंपिक में 10 मीटर एयर पिस्टल इवेंट के सिंगल्स और टीम इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीते थे। पेरिस ओलंपिक 2024 में मनु भाकर शानदार प्रदर्शन कर एक सफल खिलाड़ी साहित हुईं। उनके बेहतर प्रदर्शन के कारण उन्हें देश के सबसे बड़े खेल पुरस्कार, मेजर ध्यानचंद खेल रत्न से नवाजा गया। पेरिस ओलंपिक के बाद उनकी नेटवर्थ में भी बड़ी इजाफा हुआ है।

## रोहित शर्मा के कारण हैट्रिक से चूके अक्षर पटेल

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का दूसरा मुकाबला भारत और बांग्लादेश के बीच दुबई के इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जा रहा है। इस मुकाबले में अभी तक भारतीय गेंदबाजों का प्रदर्शन काबिले तारीफ रहा है। लेकिन इस मैच में स्पिन ऑलराउंडर अक्षर पटेल हैट्रिक लेने से चूक गए। इस मैच में पहली पारी में अक्षर पटेल ने 9वें ओवर में दो गेंदों पर दो विकेट ले लिए थे और तीसरी गेंद पर उनकी गेंद पर जाकेर अली ने जो शॉट खेला वो स्लिप में चली गई वहां खड़े भारतीय कप्तान रोहित शर्मा से उनका कैच छूट गया। इसके साथ ही अक्षर पटेल चैंपियंस ट्रॉपी में अपना हैट्रिक पूरा करने से रह गए।

रोहित शर्मा ने जो कैच छोड़ा वो पूरी तरह से उनकी हाथ में आ गई थी, लेकिन गेंद फिर उनके हाथों से फिसल गई और इस कैच के छूटने के बाद कप्तान रोहित शर्मा बुरी तरह से झुंझला गए और अपने हाथों से मैदान को पीटते नजर आए। रोहित ने जो कैच छोड़ा वो ज्यादा मुश्किल नहीं था, लेकिन शायद अक्षर पटेल की किस्मत में हैट्रिक नहीं लिखा था और वो इससे चूक गए।

इस मैच में बांग्लादेश ने टॉस जीता था और पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया था। पहले बल्लेबाजी करने आई बांग्लादेश की टीम की शुरुआत बेहद खराब रही और इस टीम ने पहले ही ओवर में 2 विकेट गंवा दिए।

वहीं इस मैच की पहली पारी में रोहित शर्मा ने 9वां ओवर फेंकने के लिए गेंद अक्षर पटेल के हाथों में दी और उन्होंने इस ओवर की दूसरी गेंद पर तंजीद हसन को केएल राहुल के हाथों कैच आउट करवा दिया जिन्होंने 25 गेंदों पर 25 रन बनाए थे। इसके बाद तीसरी गेंद पर मुश्फिकुर रहीन को डक पर केएल राहुल के हाथों से कैच करवाकर पवेलियन भेज दिया। वहीं ओवर की चौथी गेंद पर जाकेर अली ने जो शॉट खेला वो स्लिप में गई जिसका कैच रोहित शर्मा ने छोड़ा दिया। इसके लिए बाद में रोहित शर्मा ने हाथ जोड़कर अक्षर से माफी मांगी।

### दवाओं को लेकर आंदोलनरत चिकित्सकों ने जताया विरोध, डॉक्टरों ने जलाई अमानक दवाएं

# रीवा जिले की अस्पतालों में अमानक दवाओं से चल रहा इलाज!

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** जिले की शासकीय अस्पतालों में सप्लाई हो रही अमानक दवाओं को लेकर आंदोलनरत चिकित्सकों ने विरोध जताया है। चिकित्सकों ने इन दवाओं को जलाते हुए विरोध प्रदर्शन भी किया। बताया गया है कि, सरकारी अस्पतालों में जिन दवाओं से मरीजों का इलाज हो रहा था उनमें से कुछ दवाओं को अस्पताल के चिकित्सक ही अमानक बता रहे हैं। बताया गया कि इसके पूर्व में भी चिकित्सक विरोध कर चुके हैं लेकिन सरकारी सिस्टम के चलते इन्हे नहीं बदल जा सका। दरअसल प्रदेशव्यापी आंदोलन के तहत रीवा मेडिकल कॉलेज में अपने विभिन्न मांगों को लेकर लामबंद हुए वरिष्ठ चिकित्सकों ने कहा कि अस्पताल में जिन दवाओं की सप्लाई हो रही है उनमें अधिकांश दवा अमानक है ऐसे में मरीज का इलाज कैसे हो सकता है। चिकित्सकों ने यहां तक कहा कि इसके पहले भी इस संबंध में प्रशासन औरशासन से बात की गई लेकिन कोई भी परिवर्तन नहीं किया गया। वरिष्ठ चिकित्सकों ने यह भी आरोप लगाया है कि अमानक दवा की सप्लाई संजय गांधी अस्पताल, जिला चिकित्सालय, सुपर स्पेशलिटी अस्पताल सहित सभी सरकारी अस्पतालों में हो रही है। उनका कहना है कि चिकित्सक मरीज का इलाज करते हैं और अच्छा परिणाम भी देना चाहते हैं लेकिन इलाज के लिए जो आधार होता है वह दवा है, जब वही अमानक है तो मरीज का इलाज कैसे हो सकता है।

## ट्रक चालक की मौत पर मुआवजे की मांग

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** गुरुवार को सड़क निर्माण कार्य में लगे ट्रक के पलटने से चालक की मौत हो गई थी, घटना से आक्रोशित परिजनों ने निर्माण एजेंसी को हादसे का जिम्मेदार ठहराते हुए मौके पर ही चक्काजाम कर ट्रक चालक के परिवार को कंपनी की ओर से आर्थिक मदद की मांग की थी, जिसके बाद शुक्रवार को एक बार फिर परिजन सहित ग्रामीण अस्पताल में एकत्रित हुए और पीड़ित परिवार के लिए आर्थिक मदद की मांग की। दरअसल एक दिन पूर्व बेला-सिलपरा के बीच चल रहे रिंग रोड के निर्माण कार्य के दौरान ट्रक पलटने से गोविंदगढ़ निवासी ट्रक चालक रमेश यादव की मौत हो गई थी।

घटना के दूसरे दिन भी निर्माण एजेंसी का कोई भी जिम्मेदार ना तो चालक की मौत पर मौके पर पहुंचा ना ही अस्पताल। ऐसे में अस्पताल पहुंचे परिजनों का आक्रोश एक बार फिर भड़क उठा और निर्माण एजेंसी को मौत का जिम्मेदार ठहराते हुए मुआवजे की मांग पर अड़ गए। आरोप है की कंपनी द्वारा खराब मार्ग होने के बावजूद जबरन ट्रक को ले जाया गया, जिससे ट्रक पलट गया और चालक की मौत हो गई। फिलहाल अस्पताल पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी द्वारा समझाइश देने का प्रयास किया जा रहा है।

## युवा संगम कार्यक्रम में 147 युवाओं को मिला रोजगार

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** युवा संगम कार्यक्रम के तहत शिक्षण संस्थाओं में रोजगार मेलों, आपरेंटिस एवं स्वरोजगार स्थापना के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। कलेक्टर मऊगंज अजय श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में मऊगंज जिले के शासकीय शहीद केदारनाथ स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय में एक दिवसीय रोजगार, स्वरोजगार एवं आपरेंटिससिप युवा संगम कार्यक्रम में 175 आवेदकों ने पंजीयन कराया। मेले में शामिल 6 निजी कंपनियों ने 147 युवाओं का चयन किया जिनमें रोजगार हेतु 120 व आपरेंटिससिप हेतु 27 का चयन हुआ। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि युवा संगम कार्यक्रम के तहत टाटा मोटर ऑटोमोबाइल कंपनी अहमदाबाद गुजरात में 42, ख्याति शील्ड ग्लोबल रिच रायपुर छत्तीसगढ़ में 36, डी एण्ड एच सेचरोन कंपनी इंदौर (आईसेक्ट) में 27, प्रगतिशील एग्रोटेक प्रा. लि. रीवा में 27, प्रगतिशील बायोटेक प्रा. लि. रीवा 15 आवेदकों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये गये।

### अधिवक्ताओं के बीच फंसा प्रेमी जोड़ा

# न्यायालय में शादी करने पहुंचे युवक-युवती के साथ हुई मारपीट

### पुलिस ने बड़ी मशक्कत के बाद दोनों को बचाया

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** जिला न्यायालय में उस वक्त हंगामे की स्थिति निर्मित हो गई जब दो अलग-अलग धर्म के युवक और युवती कोर्ट मैरिज करने के लिए न्यायालय जा पहुंचे। इस बात की जानकारी होने के बाद अधिवक्ताओं ने इसका विरोध शुरू कर दिया और देखते ही देखते युवक और युवती के साथ मारपीट की स्थिति निर्मित हो गई। अधिवक्ताओं का एक पक्ष जहां युवक और युवती को बचाने में लगा हुआ था तो वहीं दूसरा पक्ष उन्हें मारने पर उतारू था।

घटना की जानकारी होते ही नगर पुलिस अधीक्षक ऋतु उपाध्याय ने तत्काल थाना प्रभारी से संपर्क कर युवक और युवती को बचाने के लिए पुलिस बल भेजा। लेकिन पुलिस को भी अंदर जाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी। सिविल लाइन थाना प्रभारी कमलेश साहू ने भरसक प्रयास करते हुए पहले शादी करने आई युवती को सुरक्षित निकाला। इसके बाद युवक को स्कूटी में लेकर थाने की ओर भागे। बताया जा रहा है कि युवक मुस्लिम धर्म का है जबकि युवती हिंदू बताई जा रही है। फिलहाल दोनों को सुरक्षित सिविल लाइन थाने लाया गया है जहां पुलिस अब उनसे बातचीत करने के साथ ही परिजनों से भी संपर्क करने का प्रयास कर रही है।

## कलेक्टर ने की महाशिवरात्रि पर्व के तैयारियों की समीक्षा

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** कलेक्टर प्रतिभा पाल ने गूगल मीट के माध्यम से महाशिवरात्रि पर्व की तैयारियों की समीक्षा की। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार से अधिकारियों को निर्देश देते हुए कलेक्टर ने कहा कि सभी एसडीएम और एसडीओपी मिलकर क्षेत्र का दौरा करके कानून और व्यवस्था बनाए रखने की समीक्षा करें। महाशिवरात्रि पर्व पर रीवा शहर में विशाल जुलूस निकाला जाता है। निर्धारित मार्ग से ही जुलूस निकालने की अनुमति प्रदान करें। जुलूस में डीजे का उपयोग सीमित रखने के लिए प्रबंध करें। माननीय सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुसार रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक जिले भर में डीजे तथा अन्य ध्वनि विस्तार यंत्रों का उपयोग पूरी तरह से बंद रखना सुनिश्चित करें। निर्देशों का उल्लंघन करने वालों पर कड़ी दण्डात्मक कार्यवाही करें।

महाशिवरात्रि पर्व के निर्धारित जुलूस मार्ग में आयुक्त नगर निगम साफ-सफाई, पेयजल तथा प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित करें। लोक निर्माण विभाग एवं निर्माण एजेंसियों की प्रतिनिधि की सहायता से सड़कों में सुधार कराएं। रीवा के साथ-साथ अन्य नगर परिषदों के भी मुख्य नगर पालिका अधिकारी अपने नगरीय निकाय में साफ-सफाई और पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करें। महाशिवरात्रि के अवसर पर महामृत्युंजय मंदिर, मनकामेश्वर मंदिर कोठी कंपाउण्ड तथा कष्टहरनाथ शिव मंदिर गुढ़ सहित अन्य देवालयों में पूजा-अर्चना के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। साथ ही मेलों का भी आयोजन किया जाता है। एसडीएम मेलों में सुरक्षा, साफ-सफाई, ध्वनि विस्तार नियंत्रण तथा अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। महाशिवरात्रि पर्व में विभिन्न स्थानों पर धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने वाली संस्थाओं से संपर्क करके उनके द्वारा किए जाने वाले आयोजनों के अनुरूप व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। रीवा शहर में महाकुंभ तीर्थयात्रियों के वाहनों के कारण यातायात को सुगम बनाए रखना बड़ी चुनौती है। महाशिवरात्रि में भी लाखों तीर्थयात्री स्नान के लिए प्रयागराज जाएंगे। जिसके कारण रीवा-प्रयागराज हाइवे और रीवा शहर की सड़कों में जाम लगने अथवा वाहनों के अत्यधिक दबाव की स्थिति हो सकती है। इसे ध्यान में रखते हुए महाशिवरात्रि में यातायात प्रबंधन करें। गूगल मीट में आयुक्त नगर निगम रीवा, सभी एसडीएम, सभी मुख्य नगर पालिका अधिकारी तथा सभी मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत शामिल रहे।

## परंपरागत खेती के विकास की कार्ययोजना के लिए कार्यशाला

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** कृषि महाविद्यालय सभागार में एक दिवसीय परंपरागत कृषि विकास की कार्ययोजना तैयार करने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. संत कुमार त्रिपाठी ने कहा कि प्राकृतिक खेती और परंपरागत अनाजों तथा अन्य उत्पादों से शरीर को अधिक पोषण मिलता है। बिना खाद के की गई खेती आर्थिक रूप से भी लाभदायक होती है। विकासखण्ड स्तर पर जैविक खेती के नोडल अधिकारी और सर्विस प्रोवाइडर तैनात हैं। इनके माध्यम से परंपरागत तथा जैविक खेती के लिए ऑनलाइन पंजीयन कराएं। अब तक सिरमौर और रायपुर कर्चुलियान विकासखण्डों में जैविक खेती के लिए 150 से अधिक किसानों का पंजीयन किया गया है। खेती से अधिक लाभ कमाने और अनाजों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए परंपरागत खेती को किसान अपनाएं। कार्यशाला में संयुक्त संचालक कृषि केएस नेताम ने कहा कि इस कार्यशाला का आयोजन किसानों को प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। किसान जैविक खेती को गांव के समूह में क्लस्टर बनाकर अपनाएं। इससे प्राकृतिक खेती में अधिक लाभ होगा। कृषि वैज्ञानिक डॉ संजय सिंह ने कृषि विभाग की आत्मा परियोजना से प्रस्तावित कार्ययोजना के संबंध में उपयोगी सुझाव दिए। उन्होंने आत्मा परियोजना के संचालक तथा कृषि कंपनी के सर्विस प्रोवाइडरों द्वारा बनाई गई कार्ययोजना की सराहना की। कार्यशाला में उप संचालक कृषि यूपी बागरी, सभी एसएडीओ, प्रधानमंत्री सड़क सुरक्षा योजना के जिला स्तरीय समिति के सदस्यगण एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

## परीक्षा केंद्र बदलने से नाराज छात्र-छात्राओं ने जाम की सड़क, विरोध प्रदर्शन करते हुए की नारेबाजी

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** जिले के जवा तहसील अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पटेहरा का परीक्षा केंद्र बदले जाने से नाराज छात्रों ने सड़क पर बैठकर जाम लगा दिया। छात्रों द्वारा चक्काजाम से आवागमन बाधित हो गया है। प्रदर्शन कर रहे विद्यार्थियों का कहना है कि 25 सालों से विद्यालय परीक्षा केंद्र यथावत था, अचानक ऐसा क्या हो गया कि सेंटर बदलना पड़ा। ऐसे में छात्रों को परीक्षा देने में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। बतादें कि चक्काजाम से पटेहरा-डभौरा पूरी तरह से बंद हो गया। कई वाहन समेत एंबुलेंस भी फंस गई। वहीं छात्रों के विरोध प्रदर्शन और चक्काजाम की सूचना मिलते ही एसडीएम पीयूष भट्ट बच्चों को समझाइश देने के लिए मौके पर पहुंचे, लेकिन सभी परीक्षार्थी कलेक्टर को मौके पर बुलाए जाने की मांग पर अड़े रहे।

### विश्वरंग पर काव्य एवं साहित्यिक संगोष्ठी संम्पन्न

# 50 से अधिक देशों में होगा हिन्दी ओलंपियाड

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष में आईसेक्ट विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय मुख्यालय में एक साहित्यिक एवं काव्य गोष्ठी का गरिमामय आयोजन किया गया। इस अवसर पर रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल एवं वनमाली सृजन पीठ के संयुक्त तत्वावधान में होने वाले विश्व रंग फाउंडेशन तथा विश्व रंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड के पोस्टर का विमोचन किया गया।

संगोष्ठी में विंध्य क्षेत्र की वरिष्ठ रचनाकार डॉ वर्षा सिंह, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ रचना श्रीवास्तव, अर्थशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ गीता सिंह ,वनमाली सृजन पीठ के जिला इकाई के संयोजक डॉ मुकेश येंगल, रचनाकार श्रीमती सीमा रानी झा, डॉ अरुण पाठक एवं आईसेक्ट आईसेक्ट ग्रुप के क्षेत्रीय अधिकारी प्रवीण तिवारी सहित नगर के गणमान्य साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे। विंध्य क्षेत्र के उपस्थित रचनाकारों द्वारा रचना पाठ से पूर्व आईसेक्ट ग्रुप के संभागीय अधिकारी श्री प्रवीण तिवारी द्वारा विश्व रंग अंतर्राष्ट्रीय के हिंदी ओलंपियाड से संबंधित विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। वनमाली सृजन पीठ के रीवा इकाई के संयोजक एवं विंध्य क्षेत्र के वरिष्ठ समाजसेवी व शिक्षाविद डॉक्टर मुकेश येंगल द्वारा सृजन पीठ के संबंध में तथा राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व रंग की विश्व व्यापी सोच के जनक वैज्ञानिक, चिंतक संतोष चौबे जी के द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार देश के साहित्य, संगीत, लोकगीत, लोक रचनाएं ,लोक परंपराएं आदि बातों को समाहित कर विज्ञान को भी साथ लेकर भारतीय युवाओं को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करने की जो कोशिश हो रही है। वह निश्चित तौर पर अत्यधिक प्रशंसनीय है।

संगोष्ठी में वरिष्ठ रचनाकार डॉ वर्षा सिंह द्वारा आत्मीय संबंधों को लेकर अपनी काव्य रचना प्रस्तुत की गई। जिसमें उन्होंने समाज परिवार और समाज के अंतर संबंधों की भी व्याख्या की। रचनाकार श्रीमती सीमा रानी झा द्वारा प्रेम संबंधों और बिखराव को लेकर बनती बिगड़ती परिस्थितियों से संबंधित रचना का पाठ किया गया ।जबकि डॉक्टर अरुण पाठक द्वारा राष्ट्रभक्ति से उत्प्रोत रचना का पाठ किया गया।

संगोष्ठी में समाजशास्त्री डॉक्टर रचना श्रीवास्तव ने अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हम सभी को अपनी मातृभाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए सतत् प्रयास करना चाहिए। शिक्षाविद् डॉ गीता सिंह ने सभी के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन प्रवीण तिवारी जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर दीपक पाठक, अंकित गौतम, हेमा मिश्रा, उमेश बारी, शिरिष तिवारी, राकेश द्विवेदी, बृजेन्द्र मिश्रा, आशीष त्रिपाठी सहित अन्य साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

## रेडक्रास सोसायटी रीवा ने प्रदेश स्तरीय प्रथम पुरस्कार के लिये हुआ चयन

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी इकाई रीवा को मध्यप्रदेश राज्य शाखा द्वारा वर्ष 2023-24 में किए गए सर्वश्रेष्ठ कार्य हेतु ""स्पेशल अवॉर्ड फॉर ओवरऑल परफॉर्मेंस ""के लिए प्रथम पुरस्कार हेतु चयनित किया किया गया है। राज्यपाल मंगूभाई पटेल 3 मार्च को राजभवन में पुरस्कार प्रदान करेंगे। प्रदेश में सर्वश्रेष्ठ सेवा कार्य करने हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्ति पर अध्यक्ष रेडक्रॉस रीवा प्रतिभा पाल ने टीम रेडक्रॉस को शुभकामनाये देते भविष्य में इसी तरह सर्वश्रेष्ठ सेवा कार्य करते रहने हेतु बधाई दी। राज्यपाल से चयरमैन डॉ. प्रभाकर चतुर्वेदी पुरस्कार ग्रहण करेंगे। संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, जयंत खन्ना, वाइस चेयरमैन ए के खान, सचिव डॉ विनोद श्रीवास्तव, एसडीएम त्रिपाठी, डॉ एसके त्रिपाठी सहित अन्य हर्ष व्यक्त जताया।

## खाद्य सुरक्षा की टीम ने होटल एमएन गैलेक्सी तथा बाबा होटल में की जाँच

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देशों के अनुसार खाद्य सुरक्षा विभाग नागरिक आपूर्ति निगम, नापतौल विभाग तथा खाद्य विभाग की संयुक्त टीम जिले भर में लगातार होटल, ढाबों एवं अन्य प्रतिष्ठानों की जाँच कर रही है। महाकुंभ में शामिल होने के लिए जा रहे तीर्थयात्रियों को गुणवत्तापूर्ण खाद्यान्न उपलब्ध कराने तथा मिलावट को रोकने के उद्देश्य से लगातार कार्यवाही की जा रही है। इस क्रम में संयुक्त टीम ने अमहिया में होटल एमएन गैलेक्सी पर छापा मारा। इस संबंध में खाद्य सुरक्षा अधिकारी अम्बरीश दुबे ने बताया कि जाँच के दौरान होटल में कमरों की किराया सूची नहीं पाई गई। होटल में अलग-अलग दिनांकों में ग्राहकों को अलग-अलग कीमत पर एक ही तरह के कमरे उपलब्ध कराए गए थे। पानी के बोतल और खाद्य सामग्री की दर तथा बिल भी जाँच के दौरान उपलब्ध नहीं कराया गया। संयुक्त टीम ने होटल संचालक संजय माधवानी के विरूद्ध प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही की। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि अमहिया में ही संयुक्त टीम ने बाबा होटल और फैमिली रेस्टोरेंट में खाद्य पदार्थों की जाँच की। टीम ने पनीर और तुअर दाल के नमूने लिए। नापतौल विभाग ने अप्रमाणित तौलकांटा पाए जाने पर जब्ती की कार्यवाही की। कार्यवाही में संबंधित विभागों के अधिकारी शामिल रहे।

## महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने व्हाइट टाइगर सफारी का किया शैक्षणिक भ्रमण

**मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।** शासकीय माधव सदाशिवराव गोलवलकर महाविद्यालय रीवा के विद्यार्थियों ने व्हाइट टाइगर सफारी का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस संबंध में इको क्लब के प्रभारी प्रोफेसर स्कन्द मिश्रा ने बताया कि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एस. एम. शुक्ला के निर्देशन में पर्यावरण शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय के विद्यार्थियों को व्हाइट मुकुन्दपुर सफारी का भ्रमण कराया गया। 35 विद्यार्थियों भ्रमण किया।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।